ॐ

श्री ज्ञानवल्लभ पुष्पमाला का

पुष्प—६

श्रीमद् देवेन्द्रसूरिजी महाराज कृत

श्रीगुरुवंदन भाष्य और पच्चक्खाण भाष्य

का

हिन्दी अनुवाद

कर्ता

श्री प्रतापमलजी सेठिया मंदसौर

खरतर गच्छीय शासन नायक गणाधीश्वर श्रीमान् सुखसागरजी म के वर्तमान पट्टधर प्रखर वक्ता वीरपुत्र श्रीमान् आनंदसागरसूरीश्वरजी म सा कि आज्ञानुयायिनी श्रीमति शिवश्रीजी म कि शिष्या विदुषी प्र श्री वल्लभश्रीजी महाराज सा के उपदेश से।

प्रसिद्ध कर्ता

श्रीजिनदत्तसूरि सेवासंघ

द्रव्य सहायक

जौहरराजजी मीश्रीलालजी नाहटा शाहदा (प-खानदेश)
(स्वर्गस्थ घीसालालजी के स्मरणार्थ)

वीर संवत   वैद वाचन

प्रकाशक —
प्रतापमल सेठिया
मन्त्री, श्रीजिनदत्तसूरि सेवासंघ,
३८, मारवाड़ी बाजार, बम्बई २.

मुद्रक —
जे एस् चन्
बम्बई वैभव
गिरगाम, बम

यत्रैकता तत्रैव शान्ति

अस्मिन् जगति सर्वे मानवा शान्तिमिच्छन्ति पर सा कथ लभ्यते तद्विषयस्तु स्वल्पानामेव दृश्यते इति तु सुनिश्चितमेव यदशान्ति तु दुःखरूपा केवलम् ततः शान्तेरभिलाषा स्वाभाविक्येव यत्र शान्तिसाम्राज्य वर्तते तत्र सर्वमपि सुखमयमेव कतिपये जना निरर्थक वितण्डावाद कुर्वन्ति तत्परिणामस्तु अशान्तावेवा गच्छति इत्यस्माद्धेतो निरर्थको विवादो वर्ज्य एव जना स्वसमयमपव्ययमेव पालयन्तु तत्र तु नैव मतद्वयम पर सामान्य वस्तु ये जना बृहद्रूपमाकारयन्ति तदेव क्लेशस्याशान्तेश्च कारण भवति ये जना विशालदृष्ट्या भवेयुस्तेषा मते तु अनेकान्तवाददृष्ट्या सर्वमपि स्वीकार्यमिति ये जनाः सिद्धान्त वादिन स्यु तदा शान्तिमूल निर्मूलमेव भवेदिति पुनश्च सर्वत्र शान्तिसुख करामलकवद् सुलभ भवेद्

आमुख

ज्ञानक्रिया भ्या मोक्ष — कहा गया है कि ज्ञान सहित जो क्रिया कि जाय वही मोक्ष फल का देने वाली है। बिना ज्ञान कि क्रिया काय क्लेश व पौदगलिक सुखतकही सिमित है। आचार्य म श्री देवेन्द्र सुरिजीने दैनिक काय में आनवाली, देववंदन, गुरु वंदन और पच्चखाण कि विधी समझाने के लिये तीनोंही भाष्य प्रकाशित कर जैन समाज पर उपकार किया है, उसका गुजराती भाषा में कितनेही स्थानो से अनुवाद हो चुका है परन्तु हिन्दी भाषी भाइओं केलिऐ आवश्यक समझकर पूजनीय प्रवर्तिनि जी श्री वल्लभ श्री जी म कि आज्ञा शिरोधार्यकर इन तिनों भाष्यों का हिन्दी अनुवाद मैंने किया है। जिसमें चैत्य वंदन भाष्य का अनुवाद तो प्रथम प्रकाशीत हो चुका है यह दोन्हों भाष्य अब प्रकाशित होने जा रहे है। प्रेस कि असुविधा के कारण दोनों भाष्यो को पृथक पृथक प्रेसों म छपाने पडे जिसमें गुरु वंदन भाष्य में तो प्रेस के कारण अत्यन्त कष्ट उठाना पडा व बहुत ही अशुद्धियां रहा इस केलिये पाठक क्षमा करे।

गुरु वंदन कि विधी समझने सक्षेप में गुरुका स्वरूप भी समझ लिया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा अत संक्षेप मे गुरु का स्वरूप लिखता हुं। (गु) अर्थात-अंधकार (रु) अर्थात नाश करनेवाले मतलब मिथ्यात्वरूपी अंधकार को नष्ट करने में जो सहायक हो वोहि गुरु है। व्यवहारी कि दृष्टिमें चोरी हिंसा, माया, कपट आदि जो सिखावे वोभी गुरुही हो सकता है पर वह कुगुरू के लक्षण है सुगुरू वाही हो सकता है जो (१) कंचन कामिनी का त्यागी हो (२) समाज पर व किसी पर भार रूप न हो (३) क्रोधमान माया लोभादि, दुर्गुणों से वंचित हो (४) अहिंसा सत्य और अस्तेय का पालन जिनके जीवन के मुख्य अंग हो। इन वार्तो के पालन करने के लिये उन्हे अनेक प्रकारके कितनेही नियमों का पालन करना पड़ता है जो कई पृथक पुस्तकों में प्रकाशीत है अत यहाँ लिखकर लेख ... ना नहीं चाहता

उपर जो संक्षेपमें गुण बताये उन करके युक्त हो वह सचा गुरू है उसकि भक्ती व वंदन हमे ज्ञान प्राप्त करवाकर मोक्ष फलके देनेका बहुत बडा आल

दन है अतः इस भाष्य मे लिखी निथियुक्त वंदन करने का म पाठकों मे सानुग्रह निवेदन करता हूं।

इस भाष्य के अनुवाद मे पृष्ठ ४ में जो थोभ वंदन कि विधी बताइ है उसके मुलगाथा में 'वंसणीय' शब्द है। और उसका अर्थ में साधु साध्वी दोनो लिखा है। फिरभी किसी २ अनुवाद मे इसका अर्थ शीफ साधु कर के साध्वीजी म को वदन के लिये श्राविका को ही बताया है। यह बहुत विचार नीय है। साध्वी जी म पाच महाव्रतों कि धारक है। जबके श्रावक तो अणुव्रतों के धारक भी है या नही, ऐसी स्थिति में वंदन नही करनेका कहना कहाँ तक युक्ति संयुक्त होगा। उसका पाठक निष्पक्षता से स्वयं सोच ले।

पच्चखाण के विषय में इतना ही निवेदन है के गच्छ भेदता के कारण इस म कितनेही स्थानोंपर भिन्नता नजर आती है। अत जिज्ञासु हो, वो इसका नीराकरण स्वय करले और 'मेरा सो सचा' को त्याग कर 'सचा सो मेरा' इस निति को अपनावे। इस प्रकार कि नितीहि हमें इच्छित फल (मोक्ष) को देनेवाली है।

सत्र सेवक

प्रतापमल सेठिया

आबाल्यब्रह्मचारिणी विदुषी शासनभूषणा प्रवर्तिनीजी
वल्लभश्रीजी म सा का स्तुतिरूप अष्टक

हरिगीत

रचयिता मायजी दामजी शाह

इस भूमिपर विख्यात राजस्थान नामक देश है,
राणा प्रताप समान नृप का जन्म से सुविशद है।
यहीं गांव खोहावट समा है कोहसम दृढ़ता धरे।
इस गांव में वसुधाई निज अवतार को धारण करें ॥ १ ॥

इनका पिता का नाम सूरजमलजी से विख्यात था
माताजी गोगाबाई का यश विश्व में प्रख्यात था।
गुरणीजी श्री शिवश्री समीप दीक्षा ग्रहीती आपने,
वसुधाई में से आप वल्लभश्री रूपें सत्वर बने ॥ २ ॥

जब पञ्च वर्ष की उम्र थी तब धर्मपथ में चल रही
सिद्धि अपूर्ण रही गयी थी योग साधन की सही।
इस जन्म में परिपूर्णता को प्राप्त करना था चूकी,
संसार का निस्तार करने की घड़ी भी आ चूकी ॥ ३ ॥

दश वर्ष की लघु उम्र में दीक्षा ग्रहीती आपने,
लघुवय तथापि ज्ञानसागर पार कीना आपने।
है आपका वैदुष्य अद्भूत सर्वदर्शनमय मति,
वैसी ही गुरुभक्ति परायणता तुम्हारी विलसती ॥ ४ ॥

है आप में अतिनम्रता समता सुशीलता सर्वदा,
सुसंयम आराधना की ज्योत जलती है सदा।
है आप में क्रियाविनोद निज प्रकृति में शांतता,
प्रतिभमय होती पठन-पाठन कार्यरत सुविनीतता ॥ ५ ॥

है आप खरतर गच्छ में तेजस्विता अति चौरसे
अतिप्रियता मिली जैन से जैनेतरों की औरसे।
सुल्तान अकबर आपका उपदेश पर अति मुग्ध था
निज गांव में हिंसा शिकार सदैव करना बन्ध था ॥ ६ ॥

कै मंदिरों की जीर्णता ओल्पायी निज उपदेश से
कै गांव में शाला बनी है आपके प्रतिबोध से।
जिनदत्तसूरि की उद्धरी है अनेक दादावाड़ियाँ,
पुरुषार्थकर कर आपने जिनधर्मका डंका दिया ॥ ७ ॥

जन कोइ परिचय आपका करके कभी भूल नहीं,
है आप में अद्भुत शक्ति आप भी भूले नहीं।
है सर्वदा हसता ही चहरा सब समय में आपका,
है धन्य जीवन आपका चिरकाल जय हो आपका ॥ ८ ॥



आचार्य प्रवर्तारिणी विदुषी पूज्या प्रवर्तिनी

वल्लभश्रीजी महाराज साहब



जन्म	दीक्षा	प्रवर्तिनीपद
[illegible]	वि. १ [illegible] -माघ [illegible]	वि. २०१०-आश्विन
[illegible]	शुक्ल [illegible]	शुक्ला पूर्णिमा
[illegible] ([illegible])	[illegible] (राजस्थान)	छोटीसादड़ी ([illegible])

श्री गुरु वंदन भाष्य

अर्थ सहित

मंगलाचरण

गुरु वंदणमह तिविहं, तफिट्टा छोभ बारसावत्तं
सिर नमणा इसु पढम पुण्ण-खमासमण दुगि-बीअं ॥१॥

गुरु वन्दण—गुरु वन्दन	सिर नमणाइसु— मस्तक नमनादि से
अह—अब	पढम—पहेला
तिविह—तीन प्रकार से	पुण्ण—पूरे
त—वो	खमासमण—खमासमण से
फिट्टा—फेटा वंदन	दुगि—दो
छोभ—थोभ वन्दन	बीअ—दूसरा
बारसावत्त—द्वादशावर्त	

अर्थ

अब गुरु वन्दन तीन प्रकार से कहते हैं—फेटा वन्दन थोभ वन्दन और द्वादशावर्त वन्दन। मस्तक नमाना वगैरा (दोनों हाथ जोड़ना) से पहेला फेटा वंदन होता है। पूरे दो खमासमणे देनेपर दूसरा थोभ वन्दन होता है।

दो समय वंदना करने का कारण

जहदूओ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा।
विसज्जिओ वि वंदिय, गच्छइ एमेव इत्थदुग ॥२॥

जह—जैसे	वीसज्जिओवि—विसर्जन (समाप्त) होनेपर भी
दूओ—दूत	वंदिय—वन्दन करके
रायाणं—राजा को	गच्छइ—जाता है
नमिउं—नमस्कार	एमेव—इस प्रकार से
कज्जं—कार्य को	इत्थ—यहां पर भी
निवेइउं—निवेदन कर के	दुगम्—दो
पच्छा—पीछे से	

अर्थ

जैसे दूत राजा को नमस्कार करके अपने कार्य को निवेदन करके पीछे से कार्य समाप्त होने पर भी वंदन करके जाता है, इसी प्रकार से यहां पर भी दो वक्त वन्दना समझना।

विवेचन-जैसे दूत पुरुष जब आता है, तब राजा को नमस्कार करके अपने कार्य को निवेदन करके राजा से पीछा जाने की आज्ञा पाकर भी फिर वंदना करके जाता है इसी तरह यहां (थोभ वन्दन और द्वादश वर्त वंदन) दो वक्त करना। द्वादश वर्त में तो दो वक्त वन्दना देने से २५ आवश्यक होते हैं।

गुरुमहाराज को वंदना करने का कारण

आयरस्स उ मूलं विणओ, सोगुणवओ अपडिवत्ती
साविहि-वन्दणाओ, विहि इमो बारसा वत्ते ॥३॥

आयरस्स—आचार का (धम का)	सा—वो
उ—फिर (ही)	विहि—विधि से
मूल—मूल	वन्दणाओ—वन्दन करने से
विणओ—विनय	विही—विधि
सो—वो	इमो—वह
गुणवओ—ज्ञानवन्त की	बारसावत्ते—द्वादशावर्त वन्दन में
पडिवत्ती—सेवा भक्ति	

अर्थ

आचार (धर्म) का मूल ही विनय है, वो विनय (गुण सयुक्त) गुणवान गुरु की सेवा रूप है। जो सेवा विधि से वन्दन करने से होती है। वह विधि द्वादश वर्त वन्दन में कहेंगे।

द्वादश वर्त वन्दन कैसे होता है और तीनों वन्दन किसका होता है।

तइयं तु छंदण दुगे, तत्थ मिहो आइमं सयल संघे
बीयं तु दंसणीणय, पय ट्ठियाणं च तइयं तु ॥५॥

तइयं—तीसरा
तु—फिर
छंदण दुगे—दो वन्दना में
तत्थ—उसमें
मिहो—परस्पर
आइमं—पहेला

सयलसंघे—सब संघमें
बीयं—दूसरा
दंसणीण—साधुओं को
पयट्ठियाणम्—पदवी धारी को
तइयं—तीसरा
तु—फिर

अर्थ

तीसरा द्वादशावर्त फिर दो वन्दना रूप से होता है। इस में पहेला फेटा वन्दन तो परस्पर सब संघ में होता है। दूसरा थोभ वन्दन साधु साध्वीओं को होता है। और तीसरा (द्वादशावर्त वन्दन) आचार्यादि पदवीधारी को होता है।

विवेचन- सुसाधु के पांच भेद-(१) गच्छगत (गच्छ की मर्यादा की रक्षा करे।) २ अनुयोगी (शास्त्र का अभ्यास करे) ३ अनियतवासी (किसी प्रकार की रुकावट के बिना विचरे) ४ गुरु सेवी (गुरु की सेवा करे, आज्ञा माने) ५ आयुक्त (संयम मार्ग में सावधान)

वन्दना के पांच नाम और उसका आवश्यक निर्युक्ति में कहा हुआ वर्णन –

वंदण चिइ किइकम्मं, पूआकम्मं च विणय कम्मं च
कायव्वं कस्स व केण वावि काहेव कइ खुत्तो ॥५॥
कइ ओणयं कइसिरं कइहिं व आवस्सएहिं परिसुद्धं
कइ दोस विप्प मुक्कं किइ कम्मं कीस कीरइ वा ॥६॥

वन्दन—वन्दन कर्म	कइ सिर—कितनी बार मस्तक
चिइ—चिति कर्म	कइ हिं व—वा किनसे
किइकम्म—कृतिकर्म	आवस्सएहिं—आवश्यकों द्वारा
पूआ कम्म—पूजा कर्म	परिसुद्ध—शुद्ध
विणय कम्म—विनय कर्म	कइ दोस—कितने दोषोंद्वारा
कायव्व—करना	विप्प मुक्क—रहित
कस्स—किसे	किइ कम्म—कृति कर्म (वन्दन)
व—अथवा	कीस—किसलिये
केण—किसने	कीरइ—किया जाता है
वा वि—अथवा	वा—अथवा
काहेव—किस समय	
कइ खुत्तो—कितने बार	
कइ ओणय—कितने अवनत	

अर्थ

१ वन्दन कर्म, २ चितिकर्म, ३ कृतिकर्म, ४ पूजाकर्म ५ विनय कर्म। ये पांच किस को करना? (आचार्यादि को) कौन करे? (सब) कब करे? (ज्ञान हो तब) कितनी बार करे? (२ बार) कितना अवनत शिर का प्रमाण (दो) कितनी बार मस्तक नमावे? (४ बार) कितने आवश्यक से शुद्ध किया जाता

है? (३१) कितने दोषों से रहित किया जाता है? (३२) इति कर्म क्यों किया जाता है? (निर्जरा के हेतु)

वन्दना के २२ द्वार

पण नाम पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउ अदया
चउदाय पणनिसेहा, चउ अणिसेह अट्ठकारणय ॥७॥
आवस्सय मुहणंतय, तणुपेह पणीस दोस बत्तीसा
छगुण गुरुठवण दुग्गह दुछवीसक्खर गुरुपणीसा ॥८॥
पय अडवन्न छठाणा छगुरुवयणा आसायण तित्तीसं
दुविही दुवीस दारेहि चउसया बाणउइ ठाणा ॥९॥

पण नाम—५ नाम
पणाहरणा—५ दृष्टान्त
अजुग्ग पण—५ अयोग्य
जुग्ग पण—५ योग्य
चउ अदया—४ अदाता
चउदाय—४ दाता
पणनिसेहा—५ स्थान पर निषेध
चउ अणिसेह—४ स्थान अनिषेध
अट्ठकारणय—८ कारण
आवस्सय—आवश्यक
मुहणंतय—मुहपत्ति
तणुपेह—शरीर की पडिलेहणा
पणीस—२५
दोस बत्तीसा—३२ दोष
छगुण—६ गुण
गुरु ठवण—गुरुस्थापना
दुग्गह—२ अवग्रह
दुछवीसक्खर—२२६ अक्षर
गुरुपणीसा—२५ जोड़ाक्षर
पयअडवन्न—५८ पद

उठाणा—५ कथनक (शिष्य का)	दुविही—२ प्रकार की विधि
सगुरु वयणा—गुरु के ५ वचन	…मि—३२
आसायण—आशातना	…द्वारों से
तिन्निसय—३३	…१९८
	…—भेद

अर्थ

१ वन्दना के ५ नाम, पाँच उदाहरण (दृष्टान्तादि) अयोग्य पात्र … आचार्यादि पाँच योग्य ५ वार … वन्दना के देनेवाले ७ पाँच स्थान से … का निषेध … स्थान से वांदणा अनिषेध … कारण, … आवश्यक ११ मुहपत्ति का … पडिलेहणा १३, … दोष … होने वाले ६ गुण १५ गुरु स्थापना १६ … प्रकार का अवग्रह … ६ अक्षर … आशातना … शिष्य को पूछने योग्य ६ स्थान २० गुरु के ६ वचन २१, ३ आशातना २२ दो प्रकार की … विधि। इस प्रकार २ … द्वारों से ४९२ उत्तर भेद होते हैं।

वादना के ५ नाम का पहला द्वार

वंदणय चिइकम्म किइकम्म विणयकम्म पूअकम्म
गुरु व दणा पणगा … एवं … इस

वंदणकम्मं—वंदन कर्म
चिइकम्म—चिति कर्म
किइकम्म—कृति कर्म
विणय कम्म—विनयकर्म
पूयकम्म—पूजा कर्म
गुरुवंदण—गुरु वंदना के
पणनामा—५ नाम
दव्वेभावे—द्रव्य और भाव
दुहा—२ प्रकार से
ओहेण—सामान्य से

अर्थ

१ वन्दन कर्म स्तुति करना २ चिति कर्म रजोहरणादि रखने की विधि में चतुर ३ कृति कर्म को वन्दना देना ४ विनय कर्म गुरु का विनय करना याने अनुकूल प्रवृत्ति रखना ५ पूजा कर्म मन वचन और काया की प्रशस्त चेष्टा। इस प्रकार गुरु वन्दना के ५ नाम द्रव्य और भाव इस तरह दो प्रकार से सामान्य से हैं।

विशेषार्थ—मिथ्या दृष्टि और उपयोग रहित जो वन्दन हो वह द्रव्य वन्दन और उपयोग सहित सम्यग् दृष्टि का वन्दन सो भाव वन्दन

वन्दन कर्म पर ५ दृष्टान्त का दूसरा द्वार

सीयलय खुड्डुए वीर, कण्ह सेवगदु पालए सबे
पंचे ए दिट्ठंता किइकम्मे दव्व भावेहिं ॥१२॥

शीयलय—शीतलाचार्य
खुड्डय—क्षुल्लकाचार्य
वीर कण्ह—वीरा सालवी और कृष्ण
सेवग—दो (राजा के) सेवक
पालए सबे—पालक और शाम्ब

पंच—पांच
ए ए—ये
दिट्ठंता—दृष्टान्त

किइकम्मे—कृतिकर्म में
दव्वभावेहिं—द्रव्य और भाव
से

अर्थ

१ शीतलाचार्य २ क्षुल्लकाचार्य ३ वीरा शालवी और कृष्ण ४ (राजा का) दो सेवक ५ पालक और शाम्ब यह पांच दृष्टान्त कृति कर्म (वन्दना) के लिये द्रव्य और भाव से समझना।

प्रथम वन्दन कर्म पर शीतलाचार्य का दृष्टान्त

विवेचन—हस्तिनापुर नगर में वज्रसिंह राजा के सौभाग्यसुन्दरी नाम की रानी के शीतल नाम का पुत्र था और शृंगारमंजरी नाम की पुत्री थी, जो कंचनपुर के विक्रम सेन राजा को परणाई अनुक्रमसे शीतलकुमार राजा हुआ। उसने धर्मघोष सूरीश्वर से उपदेश सुन वैराग्यवान हो दीक्षा ग्रहण की। बादमें गुरुके पास सिद्धान्तादि पढकर गीतार्थ होकर आचार्य पद प्राप्त किया। शृंगारमंजरी के चार निपुण पुत्र हुए थे उनके सन्मुख उनकी माता हमेशा अपने भाई की प्रशंसा करे कि 'धन्य है तुम्हारे मामा को जिसने राज ऋद्धि छोड कर दीक्षा ली' इस कारण से वो चारों भाई भी वैराग्य पाकर गुरु के पास दीक्षा लेकर अनुक्रम से गीतार्थ हुवे बाद में शीतलाचार्य के समीप के नगर में पधारे सुनकर गुरुको पूछ कर उनको वन्दना करने गये सूर्यास्त का समय होजाने से वो चारों साधु नगर के बाहर एक मन्दिर में समय ठहरे और किसी श्रावक से अपने आने का

आचार्य को कहलाया गया। को शुभ ध्यान के प्रताप से उसको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। प्रभात होने पर उनका आना जानकर शीतलाचार्य स्वय उन साधुओं से मिलने को सामने आये। यहां पर रात्रि को जो उनको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ उसका उन आचार्य को मालूम नहीं था वो पहला साधु आचार्य का वंदनादि नहीं करने से आचार्य के मार्ग में क्रोध उत्पन्न होने से उल्टे वो उनको वन्दना करने लगे तब केवली साधुओं ने कहा कि तुम कषाय से सरकर यह द्रव्य वंदन करते हो सो उचित नहीं है येबात सुनकर आचार्य ने पूछा कि आप यह बात किस प्रकार जानकर कहते हो। तब केवली साधुओं ने कहा कि 'केवल ज्ञान' से। ऐसा सुनकर आचार्य एकदम सभ्रमित होकर कहने लगे कि हा हा हतभाग्य मैंने केवल ज्ञानी साधुओं की आशातना करी। ये मेरा पाप मिथ्या हो। ऐसा कह कर केवलज्ञानी साधुओं को भाव वन्दन किया इससे चौथे केवली को व इन सब महात्माओं को भी केवल ज्ञानप्राप्त हुआ।

इसी स्थिति कर्म पर क्षुल्लक आचार्य का दृष्टान्त

एक आचार्य महाराज ने अपने एक छोटे शिष्य को अच्छे गुण लक्षण से युक्त जानकर अपने अन्त समयमें उसको आचार्य पद दी। वे क्षुल्लक (छोटा) आचार्य गीतार्थ मुनि के पास शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। वो मुनि भी उन आचार्य का बहुत मान रखते हैं। किसी वक्त मोहनीय कर्म के प्रबल उदय से वो छोटे आचार्य परिणामों से गिर गये इसलिये जब दूसरे साधु भिक्षादि के लिये उपाश्रय के बाहर गये थे तब वो वहांसे निकल गए। रास्ते

म जाते जंगलमें बहुमसे उत्तम गुणवाले होते हुए एक गृहस्थ को शमी वृक्ष (खेजड़ा) को पूजता देख कर आचार्य ने उसका सच्चा कारण पूछा तब उस गृहस्थने कहा कि हमारे पूर्वज हमेशा से इसको पूजते आये हैं इसलिये मैं भी पूजता हूँ यह बात सुनकर आचार्य चकित होकर विचारने लगे कि मैं भी इस शमी वृक्ष जैसा गुणहीन हो" पर भी सिर्फ रजो हरणादिक द्रव्य चिति कर्म गुण के कारण बहुत से गुणी जन मेरेको पूजते मानते हैं॥ ऐसा विचार कर वहाँसे ही पीछे आकर गीतार्थ साधु के पास अपने दोष (पाप) की आलोचना लेकर करके संयम मार्ग में उज्वल हुआ। ये भाव चिति कर्म हुआ समझना।

तीसरा कृतिकर्म पर वीरा सालवी और कृष्ण का दृष्टांत

एक वक्त श्री नेमिनाथ भगवान परिवारसहित द्वारिका नगरी में पधारे तब कृष्ण वासुदेव ने सब साधुओं को बड़े उल्लसित भाव से (द्वादशावर्त) वन्दन किया यह भाव कृति कर्म समझना लेकिन वीरा सालवी ने तो सिर्फ कृष्ण के प्रेम व रखने के हेतु साधुओं को द्रव्य वन्दन किया वो द्रव्य कृतिकर्म समझना।

चौथा पूजा कर्म उपर दो सेवकों का दृष्टांत

एक राजा के दो सेवक अपने गांव की सीमा के लिये झगड़ा होने से अपने अपने कार्य पूर्ण करने को गांव से जाते थे इतने में एक उत्तम अणगार (निर्ग्रंथ साधु) सामने मिले, तब [illegible] उस पर "साधो दृष्टे ध्रुवा सिद्ध"

याने साधु के देखने से निश्चय कार्यकी सिद्धि होतीहै ऐसे मांगलिक वचन कहता हुआ मुनि को प्रेम भक्ति से प्रणाम किया। यह भाव पूजा कर्म और दूसरे सेवक ने हँसी के साथ सिर्फ व्यवहार रूढ़ि को मान देकर प्रणाम किया सो द्रव्य पूजाकर्म जानना। बाद में राज दरबार में राजा के पास जाने पर पहले सेवक का जय और दूसरे का पराजय हुआ।

पांचवाँ विनय कर्म पर पालक और शाम्ब का दृष्टान्त

एक समय श्री नेमिनाथ भगवान द्वारिका में पधारे तब श्री कृष्ण ने कहा कि जो कोई सबसे पहिले आकर प्रभु को वन्दना करेगा उसे मैं मेरा पट्ट तुरग (अश्व रत्न) इनाम दूंगा। इस बात को सुनकर अश्वरत्न के लोभ से पालक जो अभव्य था, उसने सबसे पहले रात्रिमें ही आकर प्रभु को वन्दन किया। यह द्रव्य विनय कर्म समझना। और शांब कुमार ने जो अपने स्थान में रहतेहुए ही भाव से वंदन किया यह भाव विनय कर्म समझना। यह पाँच दृष्टान्त का दूसरा द्वार हुआ।

पासत्थादिक पाँच अवन्दनीय का तीसरा द्वार

पासत्थो ओसन्नो, कुसील संसत्तओ अहाछन्दो ।
दुग दुग तिदुगणेगविहा, अवन्दणिज्जा जिणमयम्मि ॥१२॥

पासत्थो—ज्ञानादि का लाभ न लेने वाला
ओसन्नो—क्रिया में शिथिल (कमजोर)
कुशील—ज्ञान दर्शन और चारित्रकी विराधना करने वाला
संसत्तो— जिसके साथ रहे वैसा हो जावे
अहाछंदो—स्वेच्छाचारी
दुग दुग—दो, दो
तिदुग—तीन दो
अणेगविहा—अनेक प्रकारके
अवन्दणिज्जा—वदना करने योग्य नहीं
जिणमयमि—जैन शासन में

अर्थ

१ ज्ञानादि पास में रखता हुआ भी जिसका लाभ नले, २ साधु के आचार पालने की क्रिया में शिथिल (कमजोर) ३ ज्ञान दर्शन चारित्र की विराधना करने वाला ४ जिस के संग में रहे वैसा होजावे ५ अपनी इच्छानुसार (स्वच्छन्दाचारी) चलने वाला (अनुक्रम से) दो, दो, तीन, दो और अनेक प्रकार के यह पांच जैन शासन में वदन करने योग्य नहीं है

विवेचन—पहला पासत्थो ज्ञानादि पास में रखते हुए उसका लाभ नहीं लेवे उसके दो भेद। १ देश पासत्थो और २ सव पासत्थो उसमें जो अकारण शय्यातर (प्राम के मालिक का) पिंड अभ्याहत (सामने लाया हुआ) पिंड राज्य पिंड (राजा के घर का आहार) नित्य पिंड (जिसने कहा हो की हमेशा आना मैं दूंगा, या ऐसा निमन्त्रण किया हो उसके घर का आहार) अग्रपिंड (बिना कारण अच्छा रस वाला आहारलेना) इसप्रकार दोषवाला आहारले चरित्र का गर्व करे उसे देश पासत्थो समझना। चारित्र के … [illegible] पास में रखते हुए भी

उपयोग नहीं करे सिर्फ वेशकी विडम्बना करे,गृहस्थ का तरह रहे उसको सब पासत्थो समझना। दूसरा ओसन्नो आचार पालने म शिथिल उनके दो भेद,देश ओसन्नो और सर्व ओसन्नो 'इच्छा मिच्छादि' दश प्रकार की साधु समाचारी में प्राय अपेक्षाकरे यो देश अवसन्न। चतुर्मास बिना पाटपाटले आदि काममे लेवे, बिछे हुए बिस्तर पर सोता रहे, आलस के आधीन होकर सयम को निमाल्य जैसा करे यो सर्व अव सन्न। तीसरा कुशील तीन प्रकार-के हैं १ ज्ञानकुशील, २ दर्शन कुशील, ३ चारित्र कुशील, समय, विनय, आदरादि जो ज्ञान व आचार है उनसे रहित (विपरीत) ज्ञान को पढ़े और पढ़े हुए ज्ञान का अपनी इच्छा से औंधा अर्थ करे यो ज्ञान कुशील। शका करनादि बुरी इच्छा वाले से मित्रता रखे, बिना कारण उनके साथ बातचीत करे यो दर्शन कुशील मत्र अग्रादि साधुमार्ग में दोष उपजाने वाले पाप के काम करे करावे, यो चारित्र कुशली। चौथा ससक्त उसके दो भेद १ सक्लिष्ट चित्त और असक्लिष्ट चित्त ससक्त उसम जीव हिंसादि आश्रवों का सेवन करे, दूसरों के गुण को सहन न करसके और तीनगारव का सेवन करेयो सक्लिष्ट चित्तसे ससक्त, और जैसा मौका हो वैसा (नीबू के पानी की तरह उसी रूप में होना) हो जाय जैसे अच्छे ज्ञानवान के साथ से सद्व्यवहार करे और अनाचारी के साथमें उसीके माफिक दुर्गुणी होजावे। ५ यथाछन्दा मन में जैसा आवे वैसा उत्सूत्र भाषण करे धर्माचार्य की आशातना करे अपना स्वार्थ सिद्ध हो वैसी बात करे, स्वयं ससार में डूबे और शरण आने वाले को भी डुबावे।

पाँच वन्दन करने योग्य का चौथा द्वार

आयरिय उवज्झाए पवत्ति थेरे तहेव रायणिए ।
किइकम्म निज्जरट्ठा, कायव्व मिमेसि पंचण्ह ॥१३॥

आयरिये—आचार्य	किइकम्म—कृतिकर्म
उवज्झाए—उपाध्याय	निज्जरट्ठा—निर्जरा के वास्ते
पवत्ति—प्रवर्तक	कायव्वं—करना
थेरे—स्थविर	इमेसि—ये
तहेव—उसीप्रकार	पंचण्ह—पांच को
रायणिए—रत्नाधिक	

अर्थ

१ आचार्य २ उपाध्याय ३ प्रवर्तक ४ स्थविर वैसेही ५ रत्नाधिक (ज्ञानादि गुण से उत्तम) इन पांच को निर्जरा के वास्ते वन्दन कर्म करना।

विवेचन—आचार्य-छत्तीस गुण संयुक्त, सूत्र अर्थ के जानने वाले, ज्ञानादि पांच आचारों को पालन करे और करावे २ उपाध्याय—११ अंग,१२ उपांग,चरण सित्तरी और करण सित्तरी ऐसे पचीस (२५)गुण संयुक्त अपना बड़ा सभा ता से अविनीत शिष्य को भी सूत्र पढ़ावे। ३ प्रवर्तक—तप संयम आदि अच्छे योगों में साधु समुदाय को प्रवर्तावे और उचित सम्भाल रक्खे। ४ स्थविर—चारित्र में [illegible] मगान वाले) साधु को इस लोक और परलोक

देकर चारित्र मार्ग में स्थिर करे उसके ३ भेद हैं। १ वयस्थविर २ पर्याय स्थविर ३ ज्ञानस्थविर। वयस्थविर—६० वर्ष जितने वृद्ध जो हो। पर्यायस्थविर—जिसके २० वर्ष की दीक्षा होगई हो। ज्ञानस्थविर—उत्कृष्ट से महानिशीथादि छ सूत्र केजानने वाले और जघन्य से समवायांगादि सूत्र के जानने वाले। ४ रत्नाधिक—अवस्था में बड़ा या छोटा हो परन्तु ज्ञानादि गुणों में बहुत बड़ा होया गच्छ के हितके लिये अपने से जो बन सके वो पुरुषार्थ करे वो गणावच्छेदक।

पांचमो वंदणा के अदात और छट्ठा वंदणाकेदात के दोनों द्वार

माय पिअ जिट्ठ भाया,ओमा वि त हेव सव्वरायणिए।
किइकम्म न कारिज्जा,चउसमणाइ कुणंतिपुणो ॥ १४ ॥

माय—माता	किइकम्म—वंदन कर्म
पिअ—पिता	नकारिज्जा—नहीं कराना
जिट्ठभाया—बड़ाभाई।	चउसमणाइ साधु आदिचारों
ओमावि-छोटा होने परभी	कुणंति—करे
तहेव—इसीतरह	पुणो—फिर
सव्वरायणिए—सब रत्नाधिक का	

अर्थ

१ माता २ पिता ३ बड़ाभाई इसी तरह ४ स्वधर्म छोटे होने हुए भी सब रत्नाधिकों से वंदन नहीं कराना फिर

साधु वगैरा चारों वन्दन कर्म करे।

विवेचन—गृहस्थ मा बाप से तो वन्दना करावे,

पांच स्थान मे वान्दणा नहीं देने का सातमा द्वार

विक्खित्त पराहुत्ते पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा।

आहार नीहार, कुणमाणे काउ-कामेण ॥१५॥

विक्खित्त—व्यग्रचित्त वाले	आहार—आहार
पराहुत्ते—पराङ्मुखवाला	निहार—लघुनीति वडीनीति
पमत्ते—प्रमाद वाले को	कुणमाणे—करते हो
कयाइ—कभीभी	काउकामे—करने की इच्छा वाले को
मावन्दिज्जा—वन्दन नहीं करना	

अर्थ

१ धर्म में जिस का चित्त व्यग्र हो। २ पराङ्मुख (जो सन मुख नहीं बैठे हों)। ३ प्रमाद वाले को। ४ आहार और ५ निहार (लघु नीति या बड़ी नीति) करते हों या करने की इच्छा वाले हो उनको कभी वन्दना नहीं करना।

चार स्थान पर वांदणा देने का आठवाँ द्वार

पसंते आसणत्थेअ उवसंत, उवट्ठिए।

अणुन्नवित्तु मेहावी, किइकम्म पउञ्जइ ॥१६॥

पसंते—शांत चित वाले	उवसंते—क्रोधादि से रहित
आसणत्थे—आसन पर बैठे हुए	उवट्ठिए—तत्पर तैयार
	अणुन्नवित्तु—आज्ञा लेकर

फिर	किइकम्म—वादणमें
मेहावि—बुद्धिमान	पउञ्जइ—प्रवर्ते

अर्थ

१ अन्यग्र (शांत) चित्तवाले २ आसन पर बैठे हुवे ३ क्रोधादि से रहित ४ छंदण इत्यादि (आज्ञा) करने को तैयार गुरु को बुद्धिमान शिष्य आज्ञा माग कर फिर वादणा देने को प्रवर्ते।

आठ कारण से गुरुको वदना करने रूप नवमा द्वार

पडिक्कमणे सज्झाए, काउस्सग्गा वराह पाहुणए।
आलोयण सम्वरणे उत्तमट्ठे य वदणय ॥१७॥

पडिक्कमणे—प्रतिक्रमण मे	साधु को
सज्झाए—स्वाध्याय के वास्ते	आलोयण—आलोयण के वास्ते
काउस्सग्गा—कार्योत्सर्ग वास्ते	
अवराह—अपराध खमाने के लिये	सम्वरणे—पच्चक्खाण वास्ते
	उत्तमट्ठे—अनशन के वास्ते
पाहुणए— बडेपधार हुवे	वन्दणय—वादणा

अर्थ

१ प्रति क्रमण में (चार वक्त वान्दणा देना) २ स्वाध्याय वास्ते ३ कार्योत्सर्ग वास्ते ४ पापों की क्षमा याचन करनेवास्ते ५ बाहर से बड़े साधु पधारे हों उनको (गुरुको पूछकर) ६ आलोयण (लगे हुए अपराधों की शुद्धि) वास्ते ७ उपवासादि पच्चक्खाण वास्ते ८ अनशन वास्ते वन्दन करना (वादणा देना)

१

वन्दन करते समय २५ आवश्यक करने योग्य जिसका दसवाँ द्वार

दोवणय महाजाय आवत्ता बार चउसिर तिगुत्त ।
दुपवेसिग निक्खमण पणवीसावसय किइकम्मे ॥१८॥

दोवणय—दो अवनत
महाजाय—एक यथा जात
आवत्ताबार—बारहआवर्त
चउसिर—चार उत्तम सिर नमाना
तिगुत्त—तीन गुप्ति
दुपवेस—दो बार प्रवेश
इग निक्खमण—एक बखत निकलना
पणवीस—पच्चीस
आवसय—आवश्यक
किइकम्मे—वांदणा में

अर्थ

दो अवनत (कमर के ऊपर का भाग नमाना) एक यथा जात (जन्म समय की आकृति या दीक्षा लेते समय की मुद्रा) बार आवर्त (गुरु के पग और अपने मस्तक पर हाथ लगाना) चार वक्त मस्तक नमाकर वन्दन तीन गुप्ती (मन वचन और काया की एकाग्रता) दोवक्त प्रवेश और एक वक्त निकलना इस तरह पच्चीस आवश्यक द्वादशावर्त वन्दन में होते हैं।

विवेचन—द्वादशावर्त वन्दन करते समये "इच्छामि खमासमण" से 'निसीहिआए' तक में यदि उ कहते समय अपना आधा शरीर झुकाना यो पहिला अवनत और फिर दूसरी वक्त भी इसीप्रकार करना दूसरा अवनत करना चाहिये, जन्म समय या दीक्षालेते समय जैसी मुद्रा हो वैसी नम्र मुद्रा (दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक ललाट पर लगाने वाली)

वन्दन करतेसमय करना वो यथाजात समझना।-'अहो काय, काय'- रूप तीन और —'जत्तामे, जवणि, ज्जंचभे'— रूप दूसरी तीन एक वक्त के वन्दन में और इसी प्रकार ■ दूसरे वक्त के वन्दन में सब मिल कर १२ आवर्त (गुरु के चरण पर हाथ लगा कर मस्तक पर लगाने रूपी) होते हैं-'काय संफा सं'—कहते समय अपना मस्तक गुरु के चरण पर झुकाना और —'खामेमि खमासमणो'—कहते समय फिर मस्तक नमाना इसी प्रकार दूसरे वन्दन भी होने से कुल चार वक्त मस्तक नमन (सिर नमन) होता है। मन वचन और काया को दूसरे व्यापार से हटाकर वन्दन करते समय अच्छीप्रकार से वश में रखने रूप तीन गुप्ति समझना।-'अणु, जाणहमे मिउग्गहं'—कहकर दोनों वक्त वन्दन करते गुरु की आज्ञा लेकर अवग्रह में प्रवेश करना वो दो प्रवेश समझना और पहला वन्दन करते समय —'आवस्सिआए'— कहकर अवग्रह से बाहर आना वो एक निष्क्रमण समझना। इसतरह द्वादशावर्त वन्दन में २५ आवश्यक करने चाहिये।

किइकम्मंपि कुणंतो नहोइ किइकम्म निज्जराभागी।
पणवीसामन्नयरं साहू ठाणं विराहंतो ॥१६॥

किइकम्मं पि—वन्दन कोभी	का अधिकारी
कुणंतो—करता हुआ	पणवीसा—पच्चीस में से
न होइ—नहीं होता है	अन्नयरं—एक
किइकम्म—वन्दन से होने वाली	साहू—साधु
	ठाणं—स्थान को
निज्जरा भागी—निर्जरा	विराहंतो—विराधना करता

अर्थ

वन्दन को करता हुआ भी वन्दन से होने वाली निर्जरा का अधिकारी नहीं होता है पच्चीस में से एक स्थान को विराधता हुआ साधु।

विवेचन—वन्दना करते हुए भी पचीस में कोई एक भी स्थान (आवश्यक) का विराधन करने वाला साधु वगैरा वन्दन से जो सम्पूर्ण निर्जरा होती है उसका वो अधिकारी नहीं होता है।

मुहपत्ति की पच्चीस पडिलेहणा का इग्यारवा द्वार

दिट्ठिपडिलेह एगा, छउड्ढपप्फोड तिगतिगन्तरिश्रा।
अक्खोड पमज्जणाया, नवनव मुहपत्ति पणवीसा ॥२०॥

दिट्ठी पडिलेहा एग—एक दृष्टि प्रति लेखन	अक्खोड—एक खोड़ा (ग्रहण करना)
छउड्ढपप्फोड— [illegible] ऊँचा पप्फोडा (खखेरना)	पमज्जणाया—पमाजना
तिग तिग—तीन तीन उन	नव नव—नव नव
अन्तरिय—अन्तरा से	मुहपत्ति—मुहपत्ति कि पणवीसा पच्चीस पडिलेहना

अर्थ

एक दृष्टि पडिलेहण छ ऊंचे पप्फोडा (छ वेसे मुहप त्तिका किनारे को खखेरना) तीन तीन वकमके आतरे नव अक्खोडा (ग्रहण करना) और नव प्रमार्जना (तीन तीन अक्खोडा के आतरे तीन ताम प्रमाजना) इस प्रकार से मुहपत्ति की पच्चीस पडिलेहणा।

पहले अपने हाथ मे एक बेंत ।

गल के प्रमाण वाली जो मुहपत्ति है, उसके पड खुल्ले करके उसके एक तरफ सूत्र और, दूसरी तरफ अर्थतत्व करी सदहु एसा विचारता हुआ, उसके दोनों तरफ द्रष्टी से अच्छी तरह देखना वो पहेली दृष्टी पडिलेहणा फिर मुहपत्ति के उपरके दोनों किनारे, दोनों, हाथों से, पकड कर उसको नचाने की तरह तीन तीन मीलकर छ उर्ध्वपफोडा करना। उसमें मुह पत्ति की डावी तरफ को डावा हाथ से तीन वक्त नचाकर खखेरते हुए 'समकित मोहनीय' मिश्र मोहनिय, और मिथ्या त्वमोहनीय परिहरु, एसा, विचारना। उस के बाद जीमणी तरफ को भी पहले की तरह जीमणे हाथ से खखेरते हुए काम राग, स्नेह राग और द्रष्टि राग परिहरु' एसोचितवन करना फिर मुहपत्ति का एक पड समेट कर उसका तीन व घुरह करक जीमणे हाथ की आंगुलीयों के छेटी म रखकर डावे हाथ के तला को नहीं लगाते हुवे मुहपत्ति को, अधर उंची रख कर डावे हाथ के काडा की तरफ लेजाते ग्रहण करने योग्य तीन अखफोडो करना और डावे हाथका तला उपर तीन बार गिराने रूप तीन प्रमार्जना करना इसी तरह तीन तीन वक्त अखफोडा प्रमार्जना डावा हाथ के तलाया पर जीमणे हाथ से करना, तीन तीन अखफोडा और प्रमार्जना डावे हाथ के तलीये पर करते अनुक्रम से इस प्रकार चितवन करना। 'सुदेव, सुगुरु सुधर्म आदरु' कुदेव, कुगुरु कुधर्म परिहरु ज्ञान दर्शन चारित्र आदरु ज्ञानदर्शन चारित्र विराधना परिहरु, मन गुप्ति वचन गुप्ति' काय गुप्ति आदरु मन द ड वचनदंड कायदंड परिहरु' उपर मुजब नव अखफोडा करते ग्रहण करने योग्य नव चितवन करना और नव प्रमार्जन करना त्याग करने योग्य नवचितवन करना इसप्रकार से मुल

१८ (अक्खोड़ा प्रमार्जना) में पहलेके ७ मिलाने से मुहपत्ति के कुल २५ पडिलेहण होता है।

शरीर की पच्चीश पडिलेहण का नामाद्वार

पायहिणेणं तिअ तिअ, वामे अरबाहु सीस मुहहियअे ।
अहमुड्ढाहो-पिट्ठे, चउ, छप्पय देह पणवीसा ॥२१॥

पायहिणेण—प्रदक्षिणा से	उद्ध—उपर
तिअ तिअ—तीन तीन	अहो—नीचे
वाम—बांई (ओर)	पिट्ठे—पीठपर
ईयरबाहु—जीमणी भुजा	चउ—चार और
सीस—मस्तक पर	छप्पय—छ पांव की
मुह—मुखपर	देह—शरीरकी
हियअे—हृदयपर	पणवीसा—पच्चीश
अ—नीचेके	

अर्थ- प्रदक्षिणा से तीन तीन डावी ओर जीमणी भुजा-मस्तक व मुखपर हृदयपर व कंधे के उपर नीचे पीठ पर चार पगकी छ पडिलेहणा इस तरह शरीर की पच्चीश पडिलेहणा समझना।

विवेचन-पहले की तरह मुहपत्ति को [illegible] पकडकर डावे हाथ की भुजा पर [illegible] हास्य रति, अरति परिहरु और जीमणी [illegible] भय, शोक, दुगंछा, परिहरु, [illegible] उपर तीनवक्त फेरत कृष्णलेश्या, नीललेश्या [illegible] हरु मुखपर तीन वक्त पडिलेहण करना [illegible] शाता गारव परिहरु और हृदय पर [illegible] शल्य, नियाण, शल्य, मिथ्यात्व शल्य [illegible]

इसी तरह दोनों भुजाओं के ऊपर नीचे और पीठ पर पडिले हण करता अनुक्रम से क्रोध, मान परिहरू और माया,लोभ परिहरू ऐसा विचारना तथा दोनों पग पर छओ द्रव्य से पडिलेहण करता अनुक्रम से पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय का जयणाकरू और वायू काय वनस्पति काय, त्रसकाय की रक्षा करू ऐसा मनमें चिंतवन करना इस तरह पुरुष वर्ग को काय की पच्चीश पडिलेहणा बनाई है परन्तु स्त्री वर्ग का शरीर वस्त्र से ढका हुआ होने के कारण तीन मस्तक की, तीन कण्ठ की और चार दोनों स्कन्धों की इस तरह १० पडिलेहण कम करते १५ पडिलेहण सम्भव है और साध्वीयों के तो उघाडे मस्तक के प्रतिक्रमण करने का आचार है इस वास्ते उनके मस्तक की तीन पडिलेहणा होने से कुल १८ पडिलेहण शरीर की होती है वस्त्र की पडिलेहणा के २५ और दाव डांडी कन्दोरा और बाजू बजोट की पडिलेहण में पहले के १० बोल कहना।

पच्चीश आवश्यक, मुहपत्ति और शरीर की २५
पडिलेहणा करने मे जो फल होता है

आवस्सएसु जह जह कुणइपयत्त अहीण मइरित्तं।
तिविह करण उवउत्तो तह तह से निज्जराहोइ ॥२२॥

आवस्सएसु—आवश्यक म	करण—करण में
जह जह—जैसे जैसे	उवउत्ता—उपयोग वाला
कुणइ—करे	तह तह—जैसे जैसे
पयत्त—प्रयत्न	से—तने
अहीण—हीन रहित	निज्जरा—निर्जरा
अइरित्त—ज्यादा रहित	होई—होता है
तिविह—तीन प्रकार क	

२

अर्थ

जैसे जैसे आवश्यको सेवन और [illegible]
करे तीन प्रकार के करन (मन वचन और काय) से [illegible]
वाला तैसे तैसे उसको निर्जरा होता है।

दोष अणाढिअ थड्ढिअ, पविद्ध परिपिंडिअं च टोलगई।
अ कुस कच्छम रिंगिअ, मच्छुव्वत्त [illegible] ॥२३॥
वेइय पद्धमय त भय गारव [illegible] [illegible]।
पडणीय रुट्ठतज्जिअ, सढहीलिअ [illegible] [illegible] ॥२४॥
दिट्ठमदिट्ठ सिंग- करतम्मोअण [illegible] [illegible]।
ऊण उत्तर चूलिअ मूअ ढड्ढर [illegible] च ॥२५॥
बत्तीस दोस परिसुद्ध, [illegible] [illegible] जुत्त।
सो पावइ निव्वाण अचिरेण [illegible] [illegible] ॥२६॥

दोस—दोष
अणाढिअ—अनादर
थड्ढिअ—अक्कड
अपविद्ध—भाड़ेसी
परिपिंडिअ—परिपिंडित इकठा
टोलगई—तीड़की चाल ढाल की तरह
अ कुस—अंकुश
कच्छमरिंगीअ—काछवा की तरह रींगता हुआ
मच्छुव्वत्त—मछली का
[illegible]

[illegible]—[illegible] मन में
[illegible]—वेदिका बद्ध
[illegible]—सेवा की लालच से
[illegible]—डर
[illegible]—अहंकार
[illegible]—मित्र
[illegible]—वस्त्रादि के
[illegible]—स्तैन्य चोरी
[illegible]—बिना
[illegible]—क्रोधित
[illegible]—
[illegible]—कपट

हीलिउ—अथवा	गुड्डालिअँ—उबाड़िया की तरह घुमाकर
चिपलिउ चियय—कामादो से खित वाले	बत्तीसदोस—३२ दोषों से
दिट्टमदिट्टं—देखे न देखे	परिसुद्धम—शुद्ध
सिंग—सिगड़ा की तरह	किइकम्मम्—वन्दन कर्म
कर—राजा का कर महसूल	जो—जो
तम्मोयण—उससे छुटकारा पाना	पउँजइ—करते हैं
आलिद्धणालिद्ध—हाथ लगा के न लगावें	गुरुणं—गुरु को
ऊणं—कमती	सो—वो
उत्तरचूलिअ—ठेमा पर ऊँचे स्वर से बोलना	पावइ—पाते हैं
मूअं—मुँगा की तरह	निव्वाणं—मोक्ष को
ढड्ढर—ऊँचे स्वरसे बोलना	अचिरेण—थोड़े समय में
	विमाणवासं—स्वर्ग को
	वा—अथवा

अर्थ

अनादृत दोष (बिना आदर वादे) स्तब्ध दोष (अभिमान, अकड़ाइ रखकर वादे) अपविद्ध (भाड़ी की तरह वादना कर शीघ्र चलाजाय) परिपिंडित (एक ही वन्दन से सब साधुओं का सामीलही वन्दे) टोल गति (तीड़ी की तरह कूदता हुआ वादे या ढोल की तरह उपडकर वादे) अंकुश (रजोहरण को अंकुश की तरह रखकर वादे) कच्छभरिंगित (काचबा की तरह घूमता हुआ शरीर को चलायमान करता हुआ वादे) मत्स्योद्वर्त (मछली की तरह उछलता हुआ वादे) मनःप्रदुष्ट (मन में आचार्यादि के दोषों को विचारता हुआ वादे) वेदिकाबद्ध—हाथ की रचना से युक्त (हाथ को बाहर रखकर वादे) भयेन (क्रिया मन्त्र विगेरे के लालच से वादे) स

के बाहर रहने के डर से, गौरव (समाचारी में कुशल हैं ऐसे अहंकार से) मित्र (मित्र होने के कारण) कारण (वस्त्रादि के कारण वांदे) स्तैन्य-चोरकी तरह छिपता हुआ वांदे, प्रत्यनीक — बिना अवसर वांदे, रूष्ट — स्वयम् या गुरु जिस समय क्रोधित हो उस समय वांदे, तर्जित — आंगली से तर्जना करता हुआ वांदे, शठ — विश्वास पैदा करनेको कपटसे वांदे, हीलित — अवज्ञा करता हुआ वांदे, विपरिकुंचित — वन्दन करते समय विकथायें करें, दृष्टादृष्ट — कोई देखता हो तो वांद न देखता होतो न वांदे, शृंग — पशु के सींग की तरह ललाट के दो पड़खे वांदे, कर — राजा के बेगार समझ वांदे, तन्मोचन — इस से कब छुटकारा पाऊं?, अश्लिष्टानश्लिष्ट — रजोहरण और मस्तक पर हाथ लगावे न लगावे, न्यून — अक्षर बोल कर वांदे उत्तर चूलिका — 'मत्थएण वंदामि' कहे, मूक — गूंगा की तरह मन में बोलकर वांदे, ढड्ढर — ऊंचे स्वर से बोल कर, चुडली — रजोहरण को उल्काड़िया की तरह घुमा कर वांदे इस तरह ३२ दोष रहित जो गुरु को वन्दन कर्म करते हैं वो अल्प समय में मोक्ष अथवा देवगति को पाते हैं।

विवेचन—वेदिकाबद्ध — दो ढींचण के ऊपर के नीचे दो हाथ रखकर, दो हाथ के बीच में दो ढींचण रख कर, दो हाथ में बीच में एक ढींचण रख कर या खोले में हाथ रख कर विपरीत क्रम से वन्दन करे। अश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष के चार भांगे, १ हाथ से रजोहरण और मुहपत्ति को स्पर्श कर यह पहला भांगा शुद्ध और बाकी के तीन अशुद्ध हैं। २ रजोहरण के हाथ लगावे परन्तु मस्तक पर नहीं लगावे। ३ मस्तक पर हाथ लगावे परन्तु रजोहरण पर नहीं ४ [illegible] मस्तक दोनों पर हाथ न

वन्दन से होने वाले ६ गुण का चवदमा द्वार

इहछच्चगुणा विणयो, वायर माणाइभग गुरु पूआ।
तित्थयराण यआणा, सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥२७॥

इह—यहां पर	तित्थ यराण—तीर्थंकर का
छच्चगुणा—छ गुण	आणा—आज्ञा
विणयउवायर—विनय का आराधन	सुअधम्म—श्रुत धर्म का
माणाइभँग—मानका नाश,क्षय	आराहणा—आराधन
गुरु पूआ-गुरुकी पूजा भक्ति	अकिरिआ-मोक्ष

अर्थ

यहा वन्दना करने से जो छगुण प्राप्त होते हैं १ विनय का पालन होता हैं। २ मानादिक का क्षय होता है ३ गुरु की भक्ति होती है ४ तीर्थंकर भगवान के आज्ञा का पालन होता है ५ श्रुत धर्म का पालन ६ मोक्ष

गुरु स्थापना का पंदरमा द्वार

गुरु गुण जुत्तम् तु गुरूँ, अइवतत्थ अक्खाइ।
अहवा नाणाइतियँ, ठविज्ज सक्खँ गुरुअभावे ॥२८॥
अक्खे वराडए वा, कट्ठे पुत्थए चित्तकम्मेअ।
सब्भाव मसन्भावँ, गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥२९॥
गुरु विरह मिठवणा, गुरुवए सोव दसणत्थच।
जिणविरह मिजिणबिंव, सेवणमतण सहलं ॥३०॥

अर्थ

जैसे जैसे आवश्यकों से कम और ज्याद रहित प्रफन करे तीन प्रकार के करण (मन वचन और काय) से उपयोग वाला जैसे जैसे उसको निर्जरा होती है।

दोप अणाढिअ थड्ढिअ, पविद्ध परिपिंडिअ च टोलगइ
अ कुश कच्छभ रिंगिअ, मच्छुव्वत्त मण पउट्ठ ॥२३॥
वेइय पद्धमय त भय गारव मित्तकारणा तिन्न।
पडणीय रुट्ठतज्जिअ, सढहीलिअ विपलि उ चियय ॥२४।
दिट्ठमदिट्ठ सिग करतम्माअण अणिद्धणालिद्ध।
उण उत्त चूलिअ मूअ ढड्ढर चुडलिअ च ॥२५॥
बत्तीस दास परिसुद्ध, किइकम्म ओपउन्जइ गुरुण।
सोपावइ निव्वाण अचिरेण विमाण वासम्वा ॥२६॥

दोस—दोष
अणाढिय—अनादर
थुड्डिय—अक्कड़
अपविद्ध—भाड़ेसे
परिपिंडिअ—परिपिंडित इकठा
टोलगइ—ताडकी चाल ढाल का तरह
अंकुस—अंकुश
कच्छमरिंगिअ—काछुकी तरह रींगता हुवा
मच्छुव्वत्त—मछली का तरह चपल

मणपउट्ठ—खराब मन में
वेइयबद्ध—वेदिका बद्ध
भय त—सेवा की लालचसे
भय—डर
गारव—अहंकार
मित्त—मित्र
कारणा—वस्त्रादि के कारण
तिन्न—स्तैन चोरकी तरह
पडणीय—बिना अवसर
रुट्ठ—क्रोधित
तज्जिअ—तर्जित तर्जना करता हुआ

ढीलिउ—अथवा	चुडलिअँ—उधाड़िया की तरह घुमाकर
विपलिउ चियर्थ—डामाडोल चित्त वाले	बत्तीसदोस—३२ दोषों से
दिट्ठमदिट्ठँ—देखे न देखे	परिशुद्धम्—शुद्ध
सिंग—सिगड़ा की तरह	किइकम्मम्—वन्दन कर्म
कर—राजा का कर मतलब	जो—जो
तम्मोअण—उससे छुटकारा पाना	पउँजइ—करते हैं
अणिद्धणालिध—हाथ लगा वे न लगावे	गुरुणँ—गुरु को
ऊण—कमती	सो—वो
उत्तरचूलिअ—ऊँचा पर ऊँचे स्वर से बोलना	पावइ—पाते हैं
मूअँ—गूँगा की तरह	निव्वाणँ—मोक्ष को
ढड्ढर—ऊँचे स्वर से बोलना	अचिरेण—थोड़े समय में
	विमाणवासँ—स्वर्ग को
	वा—अथवा

अर्थ

अनादृत-दोष (बिना आदर वादे) स्तब्ध दोष (अभिमान, अकड़ाई रखकर वादे) अपविद्ध (भाड़ती की तरह वादनादि कर शीघ्र चला जाय) परिपिंडित (एक ही वन्दन से सब साधुओं को सामील करे) टोल गति (तोड़ी की तरह कूदता हुआ वादे या ढोल की तरह उछलकर वादे) अंकुश (रजोहरण को अन्कुश की तरह रखकर वादे) कच्छपरिंगित (काचवा की तरह खसता हुआ शरीर को चलायमान करता हुआ वादे) मत्स्योद्वर्त (मछली की तरह उछलता हुआ वादे) मन प्रदुष्ट (मन में आचार्यादि के दोषों को विचारता हुआ वादे) वेदिकाबद्ध—हाथ की रचना से युक्त (हाथ को बाहर रख कर वादे) भजंत (किया मन्त्र वगैरे के लालच से वादे) संघ

के बाहर करने के डर से, गौरव (समाचारी में कुशल है ऐसे अहंकार से) मित्र (मित्र होने के कारण) कारण (वस्त्रादि के कारण वादे) स्तैन्य-चोर की तरह छिपता हुआ वांदे, प्रत्य नीक बिना अवसर वांदे, रुष्ट स्वयम् या गुरु जिस समय क्रोधित हो उस समय वांदे, तर्जित आंगली से तर्जना करता हुआ वांदे, शठ विश्वास पैदा करने को कपट से वांदे, हीलित मजाक करता हुआ वांदे विपरिकुंचित-वन्दन करते समय विकथायें करे, दृष्टादृष्ट कोई वस्तता हो तो वांदे न देखता होतो ने वांदे शृंग, पशु के सींग की तरह ललाट के दो पडले वांदे, कर राजा के बेगार समझ वांदे, तमोचन इस से कब छुटकारा पाऊँ ?, अश्लिष्टानश्लिष्ट रजोहरण और मस्तक पर हाथ लगावे न लगावे, कमती अक्षर बोल कर वांदे उत्तर चूलिका ऊँचे स्वर से मत्थएण वंदामि कहे, मुँगा की तरह मन में बोलकर वांदे, सब वन्दन ऊँचे स्वर से बोले रजो हरण को उन्नातिया की तरह घुमा कर वांदे इस तरह ३२ दोष रहित जो गुरु का वन्दन कर्म करते, हैं वो अल्प समय में मोक्ष अथवा स्वर्ग को पाते हैं।

विवेचन—वेदिकाबद्ध दो ढींचण उपर के नीचे दो हाथ रखकर, दो हाथ के बीच में दो ढींचण रख कर, दो हाथ में बीच में एक ढींचण रख कर या खोल में हाथ रख कर विपरीत पर्यास न वन्दन करे। अश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष के चार भांगे, १ हाथ से रजोहरण और मुहपत्ति को स्पर्श कर यह पहला भांगा शुद्ध और बाकी के तीन अशुद्ध हैं। २ रजोहरण के हाथ लगावे परन्तु मस्तक पर नहीं लगावे। ३ मस्तक पर हाथ लगावे परन्तु रजोहरण पर नहीं लगावे। ४ रजोहरण तथा मस्तक दोनों पर हाथ न लगावे।

वन्दन से होने वाले ६ गुण का च्वदमा द्वार

इहछच्चगुणा विणयो, वायर माणाइभग गुरु पूआ ।
तित्थयराण यआणा, सुअधम्माराहणाऽकिरिया ॥२७॥

इह—यहा पर	तित्थ यराण—तीर्थंकर की
छच्चगुणा—छ गुण	आणा—आज्ञा
विणयउवायर—विनय का आराधन	सुअधम्म—श्रुत धर्म का
	आराहणा—आराधन
मणाइभँग-मानका नाश,क्षय	अकिरिआ-मोक्ष
गुरु पूआ-गुरुकी पूजा भक्ति	

अर्थ

यहा वन्दना करने से जो छगुण प्राप्त होते है १ विनय का पालन होता है। २ मानादिक का क्षय होता है ३ गुरु की भक्ति होती है ४ तीर्थंकर भगवान के आज्ञा का पालन होता है ५ श्रुत धर्म का पालन ६ मोक्ष

गुरु स्थापना का प दरमा द्वार

गुरु गुण त्तनम् तु गुरूँ, अहवतत्थ भक्‌खाइ ।
अहवा नाणाइतियँ, ठविज्ज सक्खँ गुरुअभावे ॥२८॥
अक्खे वराडये वा, कट्ठे पुत्थेअ चित्तकम्मेअ ।
सब्भाव मसब्भावें, गुरुठवणा इत्तरावक्हा ॥२९॥
गुरु विरह मिठवणा, गुरुवअे सोव दमए गच ।
जिणविरह मिजिणबिंब, सेवणामतण सहलं ॥३०॥

अर्थ

१वदन करने की इच्छा प्रगट करते है। २ अवग्रह मे प्रवेश करने की आज्ञा मागते है। ३(शब्दादि के भाव और मिथ्यात्वादि शल्य में) गुरु को सुख साता (कुशलता) पूछते है। ४ तपस्या, चारित्र आदि सुख पूर्वक चल रहा है ? ५ औषध से इन्द्रिय और मन से शरीर दुख रहित है ? ६ और दोषों को भी क्षमाते है। इस प्रकार वादणा देने वाले शिष्य के छ स्थान हैं।

वादणा के छस्थान में गुरु के छ वचन का बीसवा द्वार

छदेण मणुजाणामि, तहत्ति तुब्भपि वट्टए एव
अहमवि खामेमि तुम वयणाइ वदणाइ वदण रिहस्स ॥।२४॥

छंदेण—जैसी तुमारी इच्छा	अहमवि—मैंभी
अणुजाणामि—मे आज्ञा देता हूँ	खामेमि—क्षमाता हूँ
	तुम—तुमको
तहत्ति—इस प्रकार	वयणाइ—वचन
तुब्भ पिवट्टए—तुम पोभी है	वन्दण—वन्दणा के
एव—इस प्रकार	अरिहस्स—योग्य का

अर्थ

१ जैसी तुमारी इच्छा। २ मे आज्ञा देता हुँ ३ इसी प्रकार है ४ तुमको भी है ५ इस प्रकार है ६ मैंभी तुमको क्षमाता हूँ। यह वादणा देने योग्य आचार्यादि के वचन है। -

निवेदन—वादणा नहीं दिलाना होतो पडिक्खह (ठहरो) या तिविहेण (मन वचन काया से मनाइ करता) एसा कहे।

गुरु की तेतीस आशातना नहीं करने रूप २१ मा द्वार

पुरओ पक्खासन्ने, गंता चिट्ठण निसीअणाय मणे ।
आलोयण पडि सुणणे, पुव्वालवणेअ आलोए ॥३५॥

तहउवदेस निमंतण, खद्धाय यणे तहा अपडि सुणणे ।
खद्धत्तिअ तत्थगओ, किंतु मतज्जायनों सुमणे ॥३६॥

नोसरसि कहछित्ता, परिस चिता अणु ट्ठियाइकहे
सेयार पाय घट्टण, चिट्ठुच्च समासणे आवि ॥३७॥

पुरओ—स मुख
पक्ख—पहले (बगल में)
आसन्ने—नजदीक में
गंता—जाते
चिट्ठण—खड़े रहते
निसीअण—बैठते
आयमणे—चलु करते (हाथ धोते)
आलोयण—आलोना
अपडिसुणणे-जवाब नहींदेना
पुव्वालवणे— पहले बात करना
आलोए —आलोवे
तह—इस प्रकार
उवदेस—देखावे
निमंतण—निमंत्रण (बधरात)

खद्ध—खिलाना
आययणे—खावे
तहा—इसी तरह
अपडिसुणणे—जवाब नहीं देना
खद्धत्ति—खाया है ऐसा
तत्थगओ—वहीं से बैठा हुआ बोले
कि—क्या
तुम—तु
तज्जाय—तजना करना
नोसुमणे—अच्छे मन वाले नहो
नोसरसी—सुनतानहींहै ?
कहछित्ता—कथा का छेद (भंग)
परिसचित्ता-पर्षदा का भग

अणुट्ठियाए—नहीं उठते हुए	उच्च—ऊंचे आसनपर
वहे—बोले	सम—बराबर
सथार—सथारा को	आसणे—आसन पर
पायघट्टण—पगलगावे	आवि—पण
चिट्ट—बैठे	

अर्थ

आगे बगल में और नजदीक जाते खड़े रहते बैठते (गुरु से पहले) चलु करता या हाथ पग धोते इरियावही करे रात्रि के समय गुरुके बोलाने पर भी जबाब न देवे। गृहस्थ से गुरुमहाराज के पहले बोले, और गोचरी दूसरे साधु के पास आलोय कर फिर गुरु के पास आलोवे। इस तरह गोचरी दूसरे साधु को देखावे उस को निमत्रण करे। गुरु के पहले दूसरे साधु को खिलावे अच्छा आहार स्वय खावे इसी तरह दिन का भी गुरु के बोलाने पर जबाब नहीं देवे कठोर वचन (छाया एसा) कहे, अपने आसन पर बैठा हुआ बोले क्या कहते हो ? तुच्छकार पूर्वक बोले, गुरु की तर्जना करे (सनमुख उत्तर देवे) व्याख्यान में अच्छे विचारक नहो, इस को अब तुमको बराबर याद नहीं इस कथा को मैं अच्छीतरह समझाउंगा ऐसा कह कर कथा का भग करे, गोचरी का समय होगया एसा कह कर परिषदा का भंग करे, पयदान हीं उठे तो अपनी चतुराई देखाने को कहे। गुरु के आसन (सथारा) को पग लगावे गुरु से ऊँचे या बराबर के आसन पर बैठ (गुरु के जैसे अधिक कीमत के वस्त्र रखे)

विवेचन— डाभादि का सथार २॥ हाथ का और ऊन या रूइ का शय्या अग प्रमाणे समझना।

सुबे और शाम का छोटे प्रतिक्रमण की विधि का
बावीसमा द्वार

इरिया कुसुमिणु, उस्सग्गो चिइ वन्दण पुत्ति वंदणालोय
वन्दण खामण वन्दण, संवरचउछोम दुसज्झाओ ॥२८॥
इरिया चिइ वंदण पुत्ति, वंदण चरिय वन्दणालोय
वन्दण खामण चउछोभ, दिवसुस्सग्गो, दुसज्झाओ ॥२९॥

इरिया—इरियावहि	चिइवंदण—चैत्य वन्दन
कुसुमिणु—खराबस्वपन का	पुत्ति—मुहपत्ति
उस्सग्गो—काउस्सग्ग	वन्दण—दो वन्दन
चिइवंदण—चैत्य वन्दन	चरिय—पच्चक्खाण
पुत्ति—मुह पत्ति	वन्दण—वादना
वन्दण—दो वांदना	आलोय—आलयणा(दिनका)
आलोय-आलोयना(रात्रिकी)	वन्दण—वान्दना
वन्दण—दो वादना	खामण—अब्भुट्ठिया
खामण—अब्भुठियो खमावे	चउछोभ—चार थाभ वन्दन
वंदण—दो वादणा	दिवस—देवसिय प्रायश्चित का
संवर—पच्चक्खाण	उस्सग्गो—काउस्सग्ग
चउछोभ—चार थोभ वन्दन	दुसज्झाओ-सज्झाय के दो आदेश
दुसज्झाओ—सज्झाय के दो आदेश	
इरिया—इरियावहि	

अर्थ

इरियावहि (खमा० के लोगस्स०) तक खराब स्वप्न निमित का काउसग्ग चैत्य वन्दन(नमुत्थुणं यावत् यियराय तक)

मुहपत्ति, दो वादना, इच्छा० राइअ आलोउ ? दो वादना अब्भुट्ठिअमना, दो वादना, पच्चक्खाण चार थोभ वदन (भगवनादि को) सज्झाय के दो आदेश मागकर सज्झाय करे।

सामका प्रति क्रमण

इरियावहि (खमा० से लोगस्स० तक) चैत्यवन्दन (नमुत्थुण जावयजी वराय तक)मुहपत्ति पडिलेना दो वादना दिवस चरिय वा पच्चक्खाण, दोवादना इच्छा० दिवसिय आलोउ ? दोवान्दणा अब्भुट्ठिओ क्षमान चार थोभ वन्दन (खमासमण सहित भगवान हे विगेरे) देवसि प्रायश्चित का काउस्सग्ग सज्झाय का दो आदेश लेकर सज्झाय करना।

वदन स होनेवाला फल

अे य किइकम्म विहिं जुजता चाण करणमा उत्ता।
साहू खवति कम्म, अणेगभव सन्चिय यणत ॥ ४० ॥

अे य—इस प्रकार
किइकम्म—वादणाकी
विहिं—विधिको
जुन ता—करता हुआ
चरण-चरणसित्तरी
करण-करण सित्तरी
आउता-सावधान
साहू-साधू
खव त-खपाते हैं
कम्मम्-कर्म
अणेगभव—अनेक भवोंमें
सन्चिय—एकत्रितकिये हुए
अण त-अन ता

अर्थ

इसप्रकार वदन विधि को करता हुआ चरण सित्तरि और करण सित्तरि से सावधान साधु अनेक भवों में किये हुये अनते कर्मो को खपाता है।

अप्पमइ भव्व बहित्थ; भासियं विवरियंच जमिहमये ।
त सोहंतु गीयत्था, अणभि निवेसो अमच्छरिणो ॥४१॥

अप्पमइ-तुच्छ बुद्धि वाले	तसोहंतु-उस को सुधारना
भव्व-भव्य प्राणी	गीयत्था—गीतार्थ पुरुष
बहित्थ-ज्ञान के वास्ते	अणभिनिवेसो-कदाग्रह रहित
भासिय-कहा हो	
विवरियम् विपरित (उलटा)	अमच्छरिणो -ईर्ष्या विनाके
जइहमये-जो यहापर मैने	

अर्थ

तुच्छ बुद्धि वाले भव्य प्राणीओं के वास्ते मैने जो यहा पर (भाष्य म) कुछभी उलटा कहाहो तो उसको गीतार्थ पुरुष (सूत्र ग्रंथ के जाणने वाले) कदाग्रह रहित और ईर्ष्या बिना सुधारे ।

समाप्त

शुद्धिपत्र

पृ	अशुद्ध	शुद्ध
१	दूसर	दूसरा
२	अपन	अपन
२	काय	काय
२	द्वादशावर्त	द्वादशावर्त
२	द्वादशवर्त	द्वादशावर्त
४	पदवीधारीक	पदवीधारीको
८	किइकम्पे	किइकम्मे
०	निइकम्पे	किइकम्मे
९	उनका	उनको
०	वहन	वन्दन
०	आशातन	आशातना
१	नींद	नींदा
४	अपेक्षा करे	अपेक्षा कर
४	कुशली	कुशिल
५	गुणसे	गुणमे
	ता	
६	ठ	छेद
७	पराहुते	पराहुते
[illegible]	आहर	आहार
०	वचचे	वचमे
०	सपास	सपास
	नहाइ	नहोइ
१	अेग	अेगा
२	सद्दहु	सद्दहु
२		एमा

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२९	गवि`जा	टवि`जा
२९	सथावार्य	स्थापनार्थं
२	सकस्ते	सक्ख
२९	प्रतश	प्रत्यक्ष
२९	खाडा	खाडा
२०	अनुपस्थिती से	अनुपस्थिती मे
२९	उवदेसगत्य	उवदेसगत्थ
२९	अनुपस्थिती से	अनुपस्थिती मे
३०	मया	सया
३०	कल्पना	कल्पता
३१	पारा	बारह (१२)
३२	सेघास	संघास
३२	सीना द	तीन पद
३२	गमणि उओचे	गमणि उओभे
३२	मुचेण	मुभेण
३२	से	मे
३२	च	म
३२	से	मे
३२	छ्र णा	छ्र ठाया
३३	शल्यमे	शल्यमे
३३	वदणाइ	×
३४	निमीअयायराग	निसीअणायमाणे
३४	अपदि	अपढि
३४	गद्दाय	गध्याय
३४	तु-म	तुम
३४	सिता	मिता

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२४	सेधार	साधारा
२४	रावरीकम	रावणीक्रम
२४	आमोना	आमोदना
२४	अपहिमुद्धगे	अपहिमुग्गे
२४	रात	सद्
२४	(अवपत)	आमभरा
२४	मोहरमी	मेहरमी
२४	परिसंचिमा	परिसंभीना
२५	करता	करते
२५	सेधार	सधारा
२६	छटि	छाटे
२६	चरिय	चरिय
२६	अब्नुठिया	अन्मुठिया
२६	चरिय	चरिम
२६	अन्मुट्ठिया	अन्मुट्ठिया
२६	(गमा० पे)	(गमा० से)
२६	आलापना	आलाचना
२७	अन्मुट्ठिगमना	अब्मुट्ठियाणामन
२७	(मगवत्नारिको)	(मगवानाष्को
२७	चरिय	चरिम
२७	है	ह
२७	चाण	चरण
२७	करणमा-उता	करण-माठता
२७	सन्चियगत	मणत
२७	खपारा है	क्षपाता है
२८	त सोहेतु	त शोहतु
२८	मासिय	भागिय

॥ श्री पच्चक्खाण भाष्य अर्थ सहित ॥

पचक्खाण भाष्यके ९ द्वार के ९० भेद

दस पच्चखाण चउविहि आहार दुवीसगार अदुरूता
दस विगइ तीस निगइगय, दुहभगछसुद्धिफल ॥ १ ॥

दस पच्चक्खाण = दस पच्चक्खाण	दुवीसगार = बावीस आगार	नीवियाता (नीवीगइ)
चउविहि = चार प्रकारकि विधि	अदुरूता = एक वक्त कहा हुवा	दुह भगा = दो प्रकार का भागा
चउआहार = चार प्रकार का आहार	दस विगइ = दस विगइ	■ शुद्धि = ६ शुद्धि
	तीस विगइ गय = तीस	फल = फल

अर्थ

(१) दस पचक्खाण (२) चार प्रकार कि विधि (३) चार प्रकार का आहार (५) दुसरी वक्त नही कहे हुवे ऐसे बावीस आगार (५) दस विगइ (६) तीस निवियाता (नीविगइ) (७) (मूल गुण और उत्तर गुण पच्चक्खाण रूप) दो भांगा (८) पच्चक्खाण कि छ शुद्धि (९) (पच्चक्खाणसे इस लोक और पर लोक संबधी इस तरह) दो फल इस प्रकार कुल ९ द्वार के ९० भेद हुवे

विवेचन – पच्चक्खाण = (प्रतिज्ञा) जिस तरह का व्रत अपनसे पालन हो उस का नियम गुरू या संघ के समक्ष करना, पच्चक्खाण के दो भेद (१) मूल गुण पच्चक्खाण और पिंड (आहार) विशुद्धि आदि उत्तर गुण पचक्खाण है श्रावक के पांच अणूव्रत यह तो मूल गुण पच्चक्खाण और बाकी के दिगू विरमणादि उत्तर गुण पच्चक्खाण है

उत्तर गुण पचक्खाण के दस भेद का पहला द्वार

अणागय मइक्कत कोडी सहिय नियटि अणगार
सागर निरवसेसं, परिमाण कड सके अद्धा ॥ १ ॥

अणागय = आनेसे पहले	निपटि = निश्चय	निरवसेसं = अनशन
अईक्कत = पीछेसे	अणगारं=वीना आगार के	परिमाणकड=परिमाणकृ
कोडी सहिय = कोटी के	सागारं = आगार के	सके = संकेतका
साथ (संधि के साथ)	सहीत	अद्धा = आघ–अद्धा
		(नवकारसी आदि १०

अर्थ

(१) अनागत (गुरू वगैरा के सेवा के वास्ते पयूशण आने के पहेले अट्ठम (तेला) का तप करना (२) अतिक्रांत (गुरू वगैरा के सेवा कारण से अट्ठम नही हुवा हो तो पीछे से करना) (३) कोटिसहित (सम तुल्य ऐसे दो पचखाण कि संधि करना) (४) निर्यंत्रित, पहले के प्रनिदानुस पचखाण [illegible] निश्चय करना (५) अनागार (महत्तरागारेणादि आगार के बि करना) (६) सागार (२२ आगारो से करना) (७) निरवशेष (अनशन चारहि प्रकार के आहार का त्याग करना) (८) परिमाणकृत (दत्ति कव घर और द्रव्यादि का परिमाण करना) (९) सांकेतिक (अंगुष्ठ, मुट्ठी, ग पसीना, ज्योति, जलबिंदु घर और उश्वास का संकेतवाला) नवकारसी आ

विवेचन (१) अनागत पचखाण = पयूशण वगैरा आनेपर दूसरो वेयावचादि (सेवा) करने के विचार से गुरू कि आज्ञा लेकर पर्व आने पहले अट्ठमादि तप करे) (२) अतिक्रांत = पयुषणादि पवमे आवश्यक कारण से अट्ठमादि तप न हो सका हो तो पीछे से करना (कोटिसहित एकसरसे पचख्खाणो कि संधी मीलाना वो समकोटि. (एकासने पर दूसरे दिन फिर एकासना करना) और अलग अ पचक्खाणों कि संधि मिलाना वो विषमकोटि (जैसे आयबिल उपर दूसरे दिन एकासना करना) (४) नियंत्रित प संघयण वाला कोइ एसा विचार करे कि अमुक दिन मे ऐसी तपस्या करे फिर कोइ बडाभारी कारण आजाये तो भी धारे हुवे दिन पर वो तप अवश्य करे (५) अनागार अन्नत्थणाभोगेणं और सहसागारेण ये आगार तो सब पचक्खाणो मे होते ही हैं परन्तु महत्तरागारेण आदि आ जिसमे नही होवो (वर्तमानमे वज्र रुषभनाराच संघयण नही होने से निर्यं

)

ओर अनागार पचक्खाण विच्छेद हुवे समझना) (६) सागार = आगार सहित पच्चक्खाण (७) निरवशेष = चार ही आहार और अनाहारी वस्तु का त्याग करना (अनशन करना) (८) परिमाणकृत = घर, कवल, द्रव्य और दत्ति का परिमाण (अखंड धारासे जो पानी आदि जितना द्रव्य एक साथ मे दाता दे उसका नाम दत्ति) * (९) साकेतिक = संकेतवाला पचक्खाण उसके ८ भेद (१) अगुष्ठसहिय = मुठिम अगुष्ठ रखकर पचक्खाणवाले (२) मुट्ठिसहिय = मुठिबांधकर नवकारगिन कर पचक्खाणवाले (३) गठीसहिय = नवकारगीन कर गाठ छोड़कर पचक्खाणवाले और पीछा नवकारगीन कर गाठ लगावे जो मुख आय तो चउविहार करे, ४ प्रस्वेद सहिय = पसीना सुके जबतक ५ घरसहिय = घर आउ तब तक ६ उसास सहिय = अमुक श्वासोश्वास लेउ तब तक ७ स्तिबुक सहिय = हाथ पग या बतन के उपर ष बलके बींदु सुके तब तक ८ ज्योतिष्क सहिय = दीवा आदिकि ज्योती रहे तब तक्पलनाहो तब एक नवकार गीनकर पाला जा सकता है १० अद्धा, पचक्खाण समय का प्रमाण वाला (नवकारसी आदि १० पचक्खाण)

अद्धा पच्चक्खाण के दस भेद

नवकार सहिअ पोरिसि, परिमुड्ढे गासणे गडाणेअ
आयंबिल अभतट्ठे, चरिमे अ अभिगाहे विगइ ॥ ३ ॥

नवकार सहिअ = नवकार सहित	अेगासण = अेगासना (एक वक्तभो जन)	अभतट्ठे = उपवास
पोरिसि = पोरसी		चरिमे = दिवस चरिम
पुरिमड्ढ = पुरिमाढ (दो प्रहर दिन चढे)	अेगठाणे = अेकलठाना	अभिगाहे = अभिग्रह
	आयंबिल = आंबील	विगइ = विगइ

---

* इस प्रकार १-२-३ आदि जितनी दत्ती लेना हो उतनि दत्ति परिमाण होता है ।

अर्थ

१ नमुक्कारसी (सुर्योदयसे दो घडी तक) २ पोरसी (सुर्योदयसे दो पहरतक) ३ पुरिमड्ड (सुर्योदयसे दो पहर तक) ४ अेकासना ५ अेकल ठाण (एकस्थान पर बेठे हुये एक समयही भोजन करना और उसी जगह बस्ते ले लेना बाद्मे नही लना और इसमे हाथ और मुह सिवाय दुसरा अंग नहीहिलाना) ६ आंबिल, ७ उपवास ८ दिवस चरिम ९ अभिग्रह और १० विगय विवेचन = १ नवकारसहिय (नवकारसी) 'नवकार गीन कराले' यह सुयोदयसे दो घडी के समय का पचख्खाण कहलाता है २ पोरसी एक प्रहरका प्रमाण, सा (साथ) पोरिसी = दो प्रहर का प्रमाणका पचख्खाण समझना दिनके चोथे भाग को पोरसी कहते है ३ पुरिमड्ड दो प्रहर का प्रमाण यह पचख्खाण दिनके मध्यभाग मे पुरा होता है ४ अेकासणा यह पेहले कि पोरसी आदि के साथमे एकही स्थान पर बेठ निर्जिव आहार पाणी लेनेसे होता है ५ अकलठाणा-यह पहेले कि तरह एकही स्थान पर भोजन करते हाथ और मुह सिवाय दुसरा अंग न हिलावे हु उसीस्थान पर पाणी भी ले लेना चाहिये अकासनामे तो बादमेभी प्रासुक पानी लीया जाता है पर इसम उसीस्थान पे बाद नही लीया जाता है ६ आयबील – रस कसविना (निरस) का भोजन एक हि वक्त करने से होता है अेकासन मे रस, कसवाला भोजन ले सकते हे पर आयबील और निवी मे नहि लिया जाता है, ७ अभत्तट्ठ (अभक्तार्थ) सारादिन आहार और पाणी त्याग कर या शीफ निर्जिव-प्रासुक पाणी लने से होता है, इस प्रकार के उपवास यथा शक्ती एक या अधिक भी किये जाते है ८ चरिम-यह दिवस चरिम चोविहार आदि करने से या भवचरिम यावत जिव अनशन करन से होता है ९ अभिग्रह-एसा कार्य करने या होने पर ही एसी वस्तु लेउगा एसा जो नियम करना उस को अभिग्रह कहते है द्रव्य से काल से, क्षेत्र से और भाव से यह अभिग्रह हो सकते है १० विगइ-दूध, दही घी, तेल गुड आदि इसी तरह इस के निविआता का यथाशक्ती त्याग करने से विगइ नि विगइ का पचख्खाण होता है, इसमे मांस, मदिरा शहद और मख्खन यह चार बडी विगइ का त्याग तो साथ मे ही आ जाता है इस प्रकार से दशभेद कहे इसमे 'नवकारसहिय' का समय एक महुर्त प्रमाण

ता है यह पचक्खाण भी नवकारसहिय साथही होता है जब पोरसी आदि के पचक्खाण का समय पुरा हो तब नवकारसीगीनकर ही जो पचक्खाण पालने मे आता है और 'नवकारसहिय' आदि के पचक्खाण रात के किये हुवे चोविहार आदि को पुष्ट करता है एकासना, बेयासना, आयबिल, उपवासादि मे रात्रि को सर्वथा चारो आहार का त्याग होता है

पचक्खाण करने के पाठरूप ४ प्रकार की विधिका दुसरा द्वार

उग्गओ सूरे नमो, पोरिसि पच्चक्ख उग्गओ सूरे
सूरे उग्गओ पुरिम अभ्मतट्ठ पच्चक्खाइत्ति ॥ ४ ॥

उग्गअ सूरे = सुर्योदयमे पहले	पचक्ख = पचक्खाण मे	पुरिम = पुरिमड्ढ मे
	उग्गअे सूरे = सुर्योदय से पहले	अभतट्ठ = उपवास मे
नमो = नवकारसी मे		पचक्खाइ = पचक्खाइ
पोरिसि = पोरसी के	सूरे उग्गअे = सुर्योदय होने पर	त्ति = एसे

अर्थ

१ नवकार सी मे उग्गसूरे नमुक्कार सहिय २ पोरिसी (साढपोरिसी) के पचक्खाण मे उग्गसूरे पोरसिय पच्चखामि० ३ पुरिमड्ढ (अवड्ढ) म सूरे उग्गअे पुरिमड्ढ पच्चखामि ४ उपवास में सूरे उग्गअे अभत्तट्ठ पच्चक्खाइ इसप्रकार चार विधिकही

विवेचन-जो सूर्योदय पहले 'नवकारसहिय' आदिपचक्खाण प्रमाद वशानही की या हो तो भी पुरिमड्ढ अकामणा आयबिल और उपवास आदि बडा पचक्खाण हो सकते है इसी तरह आज के सुर्योदय से आवती काल के सूर्योदय तक का पच्चक्खाण उपवास कहलाता है रात का चोविहार कीया हो तो प्रभातें 'चौथभत्त' का पच्चक्खाण हो सकते है और

विहार कियान हा तो 'अमत्तट्ठ' काही पच्चक्खाण होना है बाकी आगे और पीछे दो अकासना और बीच में उपवास करे वो तो 'चोथभत्त' [illegible] खुसी से पचक्खाण कर सकता है।[१]

दूसरी प्रकारसे भी ४ प्रकारकि विधि

भणइ गुरू सीसो पुण, पच्चक्खामित्ति एव वोसि राइ,
उव ओगित्थ पमाण नपमाण वजणच्छलणा ॥ ५ ॥

भणइ = कहना	त्ति = इस प्रकार कहे	पमाण = प्रमाण
गुरू = गुरू	भेव = इसी तरह	न पमाणं = प्रमाण रहित (अप्रमाण)
सीसापुण = शिष्यभी	वोसिरइ = वोसराना (त्यागना)	
पच्चक्खामि = पच्चक्खामि		वजण = अक्षर की
	उवओग = उपयोग	च्छलणा = भुल

अर्थ

गुरु पच्चक्खाइ कहे तब शिष्य पीछा पच्चक्खामिऐसा कहे, इसतरहगुरू वोसिरइ कहे तब शिष्य वोसिरामि कहे यहां पर उपयोग ही प्रमाण है परंतु अक्षर कि भूल पच्चक्खाण के पाठ देने में हो वो प्रमाण रूप नहीं है

एकासनादि पच्चक्खाणके पाच उचार स्थान

पढमे ठाणे तेरस बीए तिन्निउतिगाइ तइअमि
पाणास्सचउत्थमि, देसवगासइ पचमए ॥ ६ ॥

नमुपोरिसि सड्ढा पुरिमवड्ढ अगुट्ठमाइ अडतेर
निविविगइंबिल तिय तिय, दुइगासण एगठाणाइ ॥ ७ ॥

---

(१) रात्रिका चोविहार करनवाले को चउत्थ भक्का पच्चक्खाण लिया उसके लिये मतभेद है अतएव ज्ञानी कहे सो प्रमाण

पढमे ठाणे = पहेले स्थान में
तेरस = तेरहा
बीअे = दूसरे स्थान में
तिन्निउ = तीन, फीर
तिणाइ = तीन
त० अेमि = तीजे स्थानमें
पाणस्स = पाणी के छ आगार
चहुत्थमि = चोथे स्थानमें

देस [illegible]
पचन [illegible]
मनु = [illegible]
परिम = [illegible]
अड्ढ = [illegible]
पुरिम = [illegible]
अवड्ढ [illegible]
बेगु [illegible]

पहले स्थान मे तेरा पच्च [illegible] फीर तीन, चोथा स्थान मे [illegible] विगासिक आदि (पाणहार [illegible]) [illegible] (सूर्योदय से ४८ मिनीट [illegible]) [illegible] (दोढ प्रहरबाद) पुरिमड्ढ ([illegible]) [illegible] अगुट्ट सहिय आदि आठ [illegible] तीन, बियासणा अेकासना और [illegible] और पांच मे स्थान मे देसाव [illegible]

उपवासादि पच्चक्ख [illegible] उच्चार [illegible]
पढमम्मिचउत्थाइ [illegible] पाणस्स
देसवगास तुरिए [illegible]

[illegible] गण
[illegible] हे हैं
[illegible] का

पठमम्मि = पहले स्थान मे	बीयंमि = दुसरे स्थान मे	तुरिअे = चोथे स्थान मे
चउत्थाइ = चउत्थ भक्त आदि	तइय = तीजे स्थान मे	चरिमे = दिनके अंत मे
	पाणस्स = पाणी के	जह संभव = यथा संभव
तेरस = तेरह (१३)	देसवगासं = देशावगासिक	नेय = जानना

अर्थ

पहले स्थान मे चउत्थभक्त (१ उपवास) से चोतीसभक्त (१६ उपवास तक दुसरे स्थान मे नमुक्कारसी आदि तेरहा तीसरे स्थान मे पाणी के छआगार चोथे स्थान मे देशावगासिक, दिनके अंत मे यथा संभव (चउ विहार, पाणहार, देशावगासिक) समझना

कौनसा पाठ पच्चक्खाणमे नही बोलना

तहमज्झ पच्चक्खाणेसु न पिहु सुरूग्गयाइ वोसिरइ
करणविहिउनभन्नइ, जहावसीयाइ बिअ छंदे ॥ ९॥

तह = उसी प्रकार	सुरूग्गयाइ = सुय उगे आदि	जहा = जेसे
मज्झ = मध्यका		आवसीयाइ = आवसि आअे
पच्चक्खाणेसु = पचक्खाणोमे	वोसिरइ = वोसिरइ	
नपिहु = अलग अलग नही करना	करण विहि = करने कि विधि	बिअछंदे = दूसरे वादनेमे
	नभन्नइ = नही कहा है	

अर्थ

इसी तरह मध्य के (नीवि, विगइ, आंबिल, अेकासणा बीयासणा, अेकल ठाणा ओर उपवास के पच्चक्खाण में सूरे उग्गअे आदि (उग्गे सूरे) ओर वोसिरइये पद अलग अलग (वारवार) न कहने करने का विधि नही कही है जैसे आवसिआअें ' यह पद दूसरे वादणा मे नही कहा जाता है

प्रासुक पानीके ६ आगार किसको कहना

इय तिविहे पच्चक्खाणे भणंति अपाणगम्मि आगारा
दुविहारे अचित्त, भोइणो तहयफासु जले ॥ १० ॥

इय = ऐसे (इसी तरह)	अपाणगम्मि = पानी के	अचित्त भोइणो =
तिविहे = तिविहार के	आगारा = ६ आगार	अचित्त खानेवाले को
पच्चक्खाणे = पच्चक्खाण में	दुविहारे = दु विहार वाले को	तह = ऐसे
भणंति = कहते हैं		फासुजले = प्रासुक किया हुआ पानी वाले को

अर्थ

इसी तरह (एकासनादि) तिविहार के पच्चक्खाण में पानी के ६ आगार कहे हैं अचित्त खानेवाला, [illegible] दुविहारवाला और प्रासुक (अचित्त) पानी पीनेवाला को (पानी के ६ आगार) कहना

विवरण = (१) अचित्त खानेवाला और अचित्त पानी पीने वाले को पच्चक्खाण का आगार कहना (२) सचित्त खानेवाला और अचित्त पानी पीने वाले को पच्चक्खाण का आगार कहना (३) अचित्त खानेवाला और सचित्त पानी पीनेवाले को पच्चक्खाण का आगार नहीं कहना (४) सचित्त खानेवाले और सचित्त ही पानी पीनेवाले को पच्चक्खाण का आगार नहीं कहना।

प्रासुक पानी कौनसे पच्चक्खाणमें लेना

इत्तुच्चियखवणंबिल, निव्वियाइसु फासुयं चिय जलंतु
सड्ढावि पियंति तहा पच्चक्खंति य तिविहारं ॥ ११ ॥

इत्तुच्चिय = इसी लिये	फासुयं = अचित्त	पियंति = पीते हैं
खवण = उपवास	चिय = निश्चय	तहा = इसी प्रकार
अंबिल = आंबिल	जलं = पानी	पच्चक्खंति = पच्चक्खाण करते हैं
निव्वियाइसु = निवि आदि में	तु = और	
	सड्ढावि = श्रावक भी	तिविहारं = तिविहार का

अर्थ

इसी वास्ते उपवास आबिल और निविआदि (अेकासणा) मे लिये अचित्त पाणी पीर श्रावक भी पीते है उसी तरह तिविहारका भी पच्चखाण करते है

साधु और श्रावकको कौनसा पचक्खाण किस प्रकार करना उसके लिये

चउहाहार तु नमो, रत्तिंपि मुणीणसेस तिह चउहा
निसि पोरिसि पुरिमेगासणाइ, सड्ढाणदु ति चउहा ॥ १२ ॥

चउहाहार = चोविहार (चारों प्रकार का आहार)	तिहचउहा = तिविहार चोविहार	सड्ढाण = श्रावको को
तु = फिर (और) ही	निसि = रात्रिका	दुतिचउहा = दुविहार ति विहार और चोविहार
नमो = नवकारसी	पोरिसि = पोरसी	
रत्तिंपि = रात्रीका भी	पुरिम = पुरिमड्ड	
मुणिण = साधुको	अगासणाइ = अेकसना आदि	
सेस = दूसरा को (बाकी रहे हुवे को)		

अर्थ

साधुओको नवकारसी और रात्रिका पचक्खाण भी चोवीहारही होते है और बाकी (पोरसी आदि) का तिविहार और चोवीहार होते है श्रावकोको रात्रिका पचक्खाण पोरसी पुरिमड्ड और अेकासनादि दुविहार तिविहार और चोविहार (इस तरह तीन प्रकार) होते है

चार प्रकार के आहारका तीसरा द्वार

(१) एकासनादि म जो दुविहार पच्चखाण कहा है वो बहुत बडा कारण होनेपर है अन्य तो तीविहार चोविहार होता है

आहारका लक्षण

खुह-पसमक्खमेगागी-आहारिव एइ देइ वासाय
खुहिओव खिवइ कुट्ठे ज प कुवम तमाहारो ॥ १३ ॥

खुह = क्षुधाको (भुखको)	आहारिव = अथवा (आहारम)	खुहिओ = क्षुधावाला (भुखा)
पसम = दबाने मे	एइ = आवे	खिवइ = नाखे डाले
खम = समर्थ	देइ = देवे	कुट्ठे = उदरमे (पेटमे)
एगागी = एकाकि (अकेला)	वा = अथवा	ज = जो
	साय = स्वाद को	पकुवम = कादेजैसा
		त = वो पदार्थ
		आहारो = आहार

अर्थ

१ क्षुधाको दबाने मे समर्थ एसा एक द्रव्य (चावल विगेरे) या २ आहारमे आवे या ३ आहारमे स्वाद देता हो (लुन वगेरा) या ४ भुख (भुख दबाने वास्ते) कादा जैसे पदार्थको पेटमे डाल उसे आहार केहना (जैसे मिट्टि)

कौनसी कौनसी चीज आहार और पानीमे गीनी जाती है

असणे मुग्गोयण-सत्तु मड पय खज्ज रब्ब कन्दाइ
पाणे कंजिय जव कयर कक्कडो दग सुराइ जल ॥ १४ ॥

असणे = अशन मे (आहारमें)	पय = दूध	जव = जव का पाणी
मुग्ग = मुग	खज्ज = खाजा	कयर = केर का पाणी
ओयण = चावल	रब्ब = राब	कक्कडोदग = काकडी का पाणी
सत्तु = कसार	कन्दाइ = कन्दआदि	सुराइजल = मदिराआदि का
मड = रोटी पुडी आदि	पाणे - [illegible] आठ	

अर्थ

अशनमे = १ मुग २ चावल ३ कसार ४ पुडिरोटी आदि ५ दूध ६ खाजा (मीठाइ) ७ राव और ८ कदआदि यह आठहीं अशनमे गीने जाते है

पाणीमे = छास की आछ, जवका पाणी, केरका पाणी, काकडीका पाणी, और मदिरा (दारू) विगरका पाणी

खादीम स्वादीम और अनाहारी वस्तु

खाइमे भत्तोस फलाइ, साइमे सुठि जीर अजमाइ
महु गुड तबोलाइ, अणाहारे मोय निंबाइ ॥ १५ ॥

खाइमे = खादिममे	जीर = जीरा	तबोलाइ = पान विगेरे
भत्तोस = सेकाहुवाधान	अजमाई = अजमादि	अणहारे = अणहारीमे
फलाइ = फल विगेरे	महु = मध (शहद)	मोय = मूत्र
साइमे = स्वादिमम	गुड = गुड	निंबाइ = निम विगेरे
सुठि = सुठ		

अर्थ

खादिममे सेकाहुवाधान और फलादि स्वादिममे सुठ जीरा अजमादि शहद गुड ओर तबोल (पानादि) विगेरे अणहारी (जो वस्तु खानेमे अनिष्ट बुरी या कड़वी स्वाद कि होवो) मे सब जात के मूत्र और नीम (के पते फल, छाल, लकडी) विगेरे

विवेचन

रात के चोविहारवाले कारण होनेपर जो अणहारी वस्तु ले सके उन के नाम नीम के अग (पते, छाल, लकडी फल फुल विगेरे) गोमूत्र विगेरे मूत्र, गीलोय कड़वा करियातु चीमड राग उपलटे वज हरडे बहेडा आवला बबुल कि छाल धमासो आसंधी चंदन ओलीयो गुगल, बोरडी, कथेरी केलमुल पुआड मजीठ चित्रक वोल कुदरू फटकडी धुवर आकडा अथवा जो वस्तु खाने मे खराब स्वाद वाली हो अफीण विगेरे बुजगर जेरीखोपरू

अचर कस्तुरी रूमी मस्तकी खेरसार दाडम की छल मीम सेनी कपुर अति विप की कली यपमी चणिकवाव चेशर खेरी गोटली, बडी हीमज कोयदन आदि विशेष गुरू गम से समझना

ननकारसी आदिके आगारोकी सख्या का चोथा द्वार

दो नवकारि छ पोरिसि सग पुरिमुड्ढे इगासणे अट्ठ
सत्तेगठाणि अंबिलि अट्ठ पण चउत्थि छप्पाणे ॥ १६ ॥

दो = दो आगार	इगासणे = अेकसणाका	अंबिलि = आंबिल का
नवकारी = नवकारसी क	अट्ठ = आठ	अट्ठ = आठ
छ = छ (६)		पण = पाच
पोरिसि = पारसी क	सत्त = सात	चउत्थि = उपवास का
सग = सात		
पुरिमड्ढे = पुरिमड्ढका	इगठाणि = अेकलठाणा का	छप्पाणे = पाणी का छ

अर्थ

नवकारसी के दो आगार, पोरसी के छ आगार, पुरिमड्ढ का सात अवास नाका आठ अगार, अेकल ठाण का सात और आंबील का आठ, उपवास का पांच, और पाणी का [illegible] आगार ह

चउ चरिमे चिउभिग्गहि पण पावरणे नवट्ठ निव्वीए
आगारु क्खित्त विवेग मुत्तु दवविगइ नियमिट्ठ ॥ १७ ॥

चउ = चार	पण = पांच	खित्त विवेगेण
चरिमे = दिन के अतर (रात्रिके)	पावरणे = चोलपट्टा का	मुत्तं = छोडकर
	नवट्ठ = नव और आठ	दव विगइ=जघन्य नीविमे
चउ = चार	निव्वीए = निवीका	
अभिग्गहि = अभिग्रह के	आगार = आगार (उक्)	नियमि = निश्चे
	उक्खित विवेग = उक्-	अट्ठ = आठ

अर्थ

दिवसचरिम (चउविहार तिविहार और दुविहार) के चार, अभिग्रह के चार आगार, चाल पट्टा छोडने का पाच, और निवि के नव (जघन्य मे) आठ (उत्कृष्ट मे) उक्खित विवेगेण' आगार को छोडकर जघन्य मे निश्चे आठ आगार है।

नवकारसी पोरिसी साढपोरिसी पुरिमड्ढ और अवड्ढ के आगार

अन्न सह दुनमुक्कारे, अन्नसहपच्छदिस य साहु सव्व।
पोरिसि [redacted] सड्ढ, पुरिमड्ढेसत्त समहत्तरा ॥ १८॥

अन्न = अन्न थणाभोगेण	पच्छ = पच्छन्नकालेण	छ = छ
सह = सहसा गारेण	दिस = दिसामोहेण	सड्ढ = दोढ पोरसीका
दु = दो आगार	साहु = साहुवयणेण	पुरिमड्ढे = दो पोरसी में
नमुकारे = नवकारसीमे	सव्व = सव्व समाहि वत्तियागारेण	सत्त = सात
अन्न = अन्नत्थणा भोगेण		समहत्तरा = महत्तरा गारेण सहित
सह = सहसा गारेण	पोरिसी = पोरिसी	

अर्थ

अन्नत्थणा भोगेण और सहसागारेण ये दो आगार नवकारसी मे अन्नत्थणा भोगेण सहसा गारेण पच्छन्न कालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सव्व समाहि वत्तिया गारेण ये छ आगार पोरसी और साढ पोरसी के है

उपर के छ आगार को महत्तरा गारेण सहित करे तो परिमुड्ढे मे सात आगार है

अेकासना बियासणा और अेकलठाणे के आगार

अन्न सहस्सागारि आउटण गुरू अपारि मह सव्व।
अेग बिआसणि अट्ठउ सग इगठाणे आउट विणा ॥ १९ ॥

अम = अन्नत्थणा भोगेण
सह = सहसागारेण
सागारि = सागारिया गारेण
आउंण = आउण्ण पसारेण
गुरुअ = गुरु अब्भुट्ठाणेण
पारि = पारिट्ठावणिया गारेणं
मह = महत्तरागारेण
सव्व = सव्वसमाहि वत्तिया गारेण
अेग = अेकासणा
बिआसणि = बियासनामे
अट्ठ = आठ
सग = सात
इगठाणे = अेकलठाणे में
आउट = आउण्ण पसारेणं
विण = विना

अर्थ

अन्नत्थ भोगेण सहसा गारेण सागारियागारेणं आउण्ण पसारेण गुरू अब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिया गारेण अेकासणा और बियासणा में आठ आगार उसमें से आउण्ण पसारेण विना अेकल ठाणे में सात आगार

निगइनिवि और आंबील के आगार

अन्न सह लेवा गिह उक्खित पडुच्च पारिमह सव्व ।
विगइनि विगइनय पडुच्चविणु आंबिले अट्ठ ॥ २० ॥

अन्न = अन्नत्थणा भोगेण
सह = सहसा गारेण
लेवा = लेवा लवेण
गिह = गिहत्थ संसट्ठेणं
उक्खित = उक्खित विवेगेण
पडुच = पडुच्चमक्खियेण
पारि = पारिट्ठावणिया गारेणं
मह = महत्तरागारेण
सव्व = सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं
विगइ = विगइ
निविगइ = निवि मे
नव = नव
पडुच = पडुच्चमक्खियेण
विणु = विना
अंबिल = आंबिलमे
अट्ठ = आठ

अर्थ

अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ संसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण पडुच्चमक्खियेणं पारिट्ठावणिया गारेण, महत्तरागारेण सव्व समाहि वत्तियागारेण, विगई और निविमे नव (आगार) पडुच्चमक्खियेण विना आंबिलम आठ आगार.

उपवास, पाणि और अभिग्रहादि के आगार

अन्न सह पारिमह सव्व पचखणे छपाणि लेवाइ
चउ चरिमगुट्ठाइ भिग्गाहि अन्न सह सह सव्व ॥ २१ ॥

अन्न = अनत्थणा भोगेण	पच = पाच	आदि
सह = सहसा गारेण	खवणे = उपवास मे	अभिग्गहि = अभिग्रहमे
पारि = पारिट्ठा वणिया गारेण	छपाणि = पाणस्स के छ	अन्न = अनत्थ भोगेण
	लेवाइ = लेवेणवा विगेरे	सह = सह सागारेण
मह = महत्तरा गारेण	चउ = चार	मह = महत्तरा गारेण
सव्व = सव्वसमाहि वत्ति या गारेण	चरिम = दिवस चरिम	सव्व = सव्व समाहि वत्तिया गारेण
	अगुट्ठाइ = अगुट्ठ सहि	

अर्थ

अनत्थभोगेण, सहसागारेण, पारिठावणियागारेण महत्तरागारेण और सव्वसमाहि वत्तिया गारेण, ये पाच आगार उपवास मे और लेवेणवा आदि छ आगार पाणस्स (पाणी के) दिवस चरिम अगुठ सहि आदि पच्चक्खाण और अभिग्रह मे चार आगार अनत्थभोगेण, सहसा गारेण, महत्तरागारेण सव्व समाहि वत्तिया गारेण।

दश विगई में से द्रव्य और पिंड विगईओ के नाम

दुद्ध महु मज्ज तिल्ल चउरो दव विगइ चउरो पिंडदवा,
घय गुल दहिय पिसिय मक्खण पक्कन्न दो पिंडा ॥ २२ ॥

दुद = दूध	चउर = चार	पिसिय = मांस
महु = मध (शहद)	पिंडदवा = कठोर और नरम	मक्खण = मक्खन
मज्ज = मदिरा (दारू)		पक्कन्न = पक्वान (मिठाई)
तिल्ल = तेल	घय = घी	दो = दो
चउरा = चार	गुल = गुड	पिंडा = कठोर
दव विगइ = नरम विगइ	दहिय = दही	

अर्थ

दूध, मध, (शहद) मदिरा और तेल यह चार नर्म विगइ है (जिसका रेलाचेल) घी गुड, दही और मांस यह चार कठोर और नर्म है मक्खन और पक्वान यह दो कठोर है

पञ्चक्खाण के आगारो कि सख्या का यत्र कि स्थपना

अक	पञ्चक्खाणो के नाम	संख्या	आगारो के नाम
१	नवकारसी	२	अन्न सह
२	पोरिसी	६	अन्न सह पच्छन्न दिसामो साहु सव्व
३	साढपोरिसी	६	अन्न सह पच्छन्न दिसामो साहु सव्व
४	परिमुड्ढ	७	अन्न सह पच्छन्न दिसामो साहु महत्त सव्व
५	अवड्ढ	७	अन्न सह पच्छन्न दिसामो साहु महत्त सव्व
६	अेकासना	८	अन्न सह सागा आउ गुरू पारि मह सव्व
७	बियासना	८	
८	अेकलठाणा	७	अन्न सह सागा गुरू पारि मह सव्व
९	नीवि	९	अन्न सह लेवा गिहत्थ उक्खीत पडुच्च पारि महत्त सव्व
१०	विगइ	९	
११	आंबिल	८	अन्न सह लेवा गिहत्थ उक्खीत पारि महत्त सव्व
१२	उपवास	६	अन्न सह पारि महत्त सव्व चोलपट्टा (यति के वास्ते)
१३	पाणहार	६	लेवे अले अच्छे बहु ससित्थ असित्थ
१४	अभिग्रह संकेत	४	अन्न सह मह सव्व
१५	दिवसचरिम	४	
१६	भवचरिम	४	
१७	देशाविगाशिक	४	अन्न सह मह सव्व
१८	समकित	६	राया गणा देवा गुरूनी विति

मितनेक पचक्खाण के परसपर एक सरिखे पाठ और आगार

पोरिसि सड्ढ अवड्ढ दुभत्त निव्विगइ पोरिसाइ सया
अगुट्ठ मुट्ठि गठी सचित्त द वाइ भिग्गहिय ॥ २३ ॥

पोरिसी = पोरसी	पोरिसाइ = पोरसी आदि	गठी = गठी सहिय
सड्ढ = साधपोरसी	सया = एक सरखे	सचित्त द वाइ = सचित द्रव्यादि
अवड्ढ = अवड्ढ	अगुट्ठ = अगुठसहिय	अभिग्गहिय = अभिग्रह
दुभत्त = बीयासना	मुट्ठि = मुट्ठिसहिय	
निविगइ = नीवि		

अर्थ

पोरसी और साढ पोरसी के एक सरखे ६ आगार है पुरिमार्ध और अवड्ढ के एक सरखे ७ आगार है, एकासना, बियासना के सरखे ८ आगार नीवि और निगइ के सरखे ९ आगारा अगुठ सहिय मुट्ठिसहिय, गठिसहिय सचित्त द्रव्यादि के पोरसी आदि के सरखे आगार है (देशावगासिक और द्रव्य क्षेत्रादिक) और अभिग्रह के एक सरखे चार आगार है

बावीस आगारो रा अर्थ चार गाथा कर के कहते है

विस्सरण मणाभोगो सहसागारो सय मुँह पवेसो
पच्छन्न काल मेहाइ, दिसि विवज्जासु दिसिमोहो ॥ १४ ॥

विस्सरण = भुलजाने से	सय = स्वय (अपन आप)	मेहाइ = वर्षादि के कारण
अणाभोगो = उपयोग बगर	मुँह पवेसो = मुह मे प्रवेश	दिसिविवज्जासु = दिशा का फेरफार हाने से
सह सागरो = अकसमात कारण	पच्छन्न काल = ढका हुवा समय (सूर्यादि के कारण)	दिसि मोहो = दिशी मे मोह

अर्थ

बीना उपयोग के भुल जाने के कारण कोइ वस्तु मुह मे डाली जाय वो, अनत्थ भोगेणं। अपने आप अकसमात कोइ वस्तु मुह मे चली जाय वो सह

सागारेण, वर्षादि के कारण सूर्य ढक जाने से समय के पूरा न होने के पहले भोजन करे वो पच्छन्न कालेण। आंधी वगेरे के कारण दिशा का फेरफार होने से दिशा मे मोह हो जाने के कारण मालुम न पड़े वो दिशा मोहेण।

साहु वयण उग्घाडा पोरिसी तणु सुत्थया समाहित्ति
संघाइ कज्ज महत्तर गिहत्थ वंदाइ सागारी ॥ २५ ॥

साहु वयण = साधु के वचन
उग्घाडा पोरिसी = बहु पड़ीपुन्ना पोरसी
तणुसुत्थया = शरीर की स्वस्थता
समाहित्ति = समाधि (सव्व समाहि वत्तिया गारेणं)
संघाइ कज्ज = संघादि के काय
महत्तर = महत्तरा गारेण
गिहत्थ = गृहस्थ
वंदाइ = चारण, भाट
सागारी = सागारीया गारेण

अर्थ

(छ घड़ीरूप) बहु पडि पुन्ना पोरसी पूरा साधु के वचन सुनकर जो पोरसी पाले वो साहु वयणेणं आगार, शरीर कि स्वस्थता (रोग की शांती) तथा समाधि करने वास्ते पाले वो सव्व समाहि वत्तियागारेण, बड़ो की आज्ञा से, संघादि के काय हेतु जो पच्चक्खाण पालना पड़े उसका नाम महत्तरा-गारेण आगार, गृहस्थया चारण भाटादि कि द्रिष्टि लगने के कारण से एकासना दिमे उठनापड़े, पानी की रेल घरका पड़नादि नाश कारण पर उठना पड़े वो सागारियागारेण आगार

आउंटण मंगाण गुरू पाहुण साहु गुरू अब्भुट्ठाण
परिट्ठावण विहिगहिए, जहण पावरणि कडिपट्टो ॥ २६ ॥

आउंटण = सीकुड़ना (आउंटणपसारेण)
अगाण = अगोंका
गुरू = बड़ा, गुरु
पाहुण साहु = बड़ा साधु (पूज्य साधु)
गुरू अब्भुट्ठाण = गुरू अब्भुट्ठाणेण (गुरू के आने पर सत्काराथ खड़ा होना)
परिठावण = परठन योग्य (पारिठावणियागारेण)
विहिगहिअ = विधिसे लीयाहुवा
जहण = यतिको
पावरणि = वस्त्र छोड़ने को
कडिपट्टो = चोलपट्टा

अर्थ

हाथ पगादि अंगो को सिकुड़ना वो आउट पसारेण आगार, गुरुवा बड़े साधु पधारे तब उनका विनय सत्कार करन को ओगासनादि मे खड़ा होवे उसको गुरू अब्भुट्ठाणेण आगार कहते हैं। विधिपूर्वक लिया हुवा आहर परठने योग्य हो उसको गुरू कि आज्ञा से लेना उसका नाम पारिठावणिया गारेण आगार। यति साधु को वस्त्र छोड़ने के पच्चक्खाण म चोलपट्टागारेण आगार (जितेंद्रिय मुनि अभिग्रह के कारण अगर वस्त्र बीना बैठे हो और उसी समय गृहस्थ आवे तो शीघ्र चोलपट्टा पहरले)

> खरडिय लूहिय डोवाइ लेवससट्ठकुच्च मडाइ
> उक्खित्तपिंड विगइण मक्खिय अगुलीहिंमणा ॥ २७ ॥

खरडिय = लगी [illegible]	(गिह-थसंसेट्ठेण)	पिंडविगइण = कठोर विगइ को
लुहिय = पुछी हुइ	कुच्च = शाग	मक्खिय = मसला हुवा (पडुच मक्खिएण)
डोवाइ = कुरूछी वगेरा	मडाइ = मांडादि	अंगुलीहि = अंगुलियोसे
लेव = लेपा लेवेण	उक्खित्त = उठाया हुवा (उक्खित्त विविगेण)	मणा = कुच्छ
संसठ्ठ = संस्कारित		

अर्थ

नही लेने योग्य वस्तु कुड़छी पर लगी हो उसे पोंछ कर जो आहार लीया हुवा ग्रहण करे तो साधु को (आयंबिल ओर नीवि) का भग नही होवे वो लेया लेवण आगार, शाक मांड आदि की घी तेल से संस्कारित कीया हो वो उस मुनिको (नीवि आदि से) भग न होय उसको गिहत्थ संसट्ठण आगार करते है रोटी पर से कठोर विगय पडि हुइ को गृहस्थ उठाकर देवे वो रोटी को लेते हुवे साधु को (नीवि आदि का) भग न हो वो, उक्खित्त विवेगेण आगार। कुच्छ घी आदि कि अगुलियां से कणी मसली [illegible] होवे ले ते मुनिको (नीवि आदि) भग न हो उसको पडुच्चमक्खिएण आगार कहते है।

लेवाड आयामाइ इयर सो वीर मच्छ मुसिणजल ।
धोअण बहुल ससित्थ उस्सेइम इअर सित्थ विणा ॥ २८ ॥

लेवाड = लेपलगाहुवा	अच्छ=शुद्ध (अच्छेणवा)	ससित्थ = दाणा (धान)
आयामाइ = ओसामणादि	उसिण जल = गर्म पानी	सहित = ससित्थेणवा
इयर = धोना लेप लगा हुवा	धोअण = चावल का धोवण	उस्सइम = आगवाला
सोवीरं = छाछकिआछ कांजी	बहुल = बहुत लेप लगा हुवा (बहु लेवेणवा)	इअर = असित्थ (असित्थेणवा)
		सित्थविणा = दाणा बीना

अर्थ

ओसामणादि (दारा ओसली) लेप लगा हुवा (बतन में लेप लगा हुवा हो वो) पाणी को लेवेण वा आगार कांजी (छास कि आछ) का पाणी वो विना लेप लगा हुवा वो अलेवेण वा आगार, तीन उकाले [illegible] गर्म किया हुवा शुद्ध पाणी वो अच्छेणवा आगार, चावलदिके धोवण का पाणी जो बहुत लेप लगा हो उसे बहुलेवेणवा आगार, दाणायुक्त या आटे के रजकण युक्त पाणी वो ससित्थेणवा आगार दाणा वा आटे के रजकणयुक्त पाणी को वस्त्र से छाणा हुवा हो वो असित्थेणवा आगार

छमक्ष विगइ के २१ उत्तर भेद

पण चउ चउ चउ दु दुविह छभक्ख दुद्धाइ विगइ इगवीसं
तिदुति चउविह अभक्खा चउ महु माइ विगइ बार ॥ २९ ॥

खीर घय दहिअ तिल्लं, गुडपक्कन्न छभक्ख विगइ ओ
गो महिसी उट्टिअय, अेलगाण पण दुद्ध अहच उरो ॥ ३० ॥

घय दहि आ उट्टि विणा तिलसरसवि अयसिलट्ट तिल्लचउ
दय गुड पिंड गुडा दो पक्कन्नं तिल्ल घय तलिय ॥ ३१ ॥

पण चउ = पाँच, चार	खीर घय = दुध घी	घय = घी
चउ चउ = चार चार	दहि तिल्ल = दहि, तेल	दहि-ना = दही
दु दु विह = दो दो प्रकार से	गुड = गुड	उट्टि विण = ऊन्टी विना
छभक्ख = छभक्षय	पक्न = पक्वान	तिल = तिलका
दुद्धाइ = दुग्धादि	छभक्ख = छभक्ष	सरिसव = सरसुरा
विगइ = विगय	विगइ ओ = वीगइ	अयसि = अलसी का
इगवीसं = इकविश	गो महिसी = गाय और भेंस का	लट्ट = ललायत का जैसा कुसुमीका
ति दु ति = तिन दो तिन	उट्टि अय = उटडी और बकरी का	तिल्ल = तैल
चउ विह = चार प्रकार से	एलगाण = घेंटी का	चउ = चार
अभक्ख = अभ.उ	चउ रो = चार प्रकार से	दव गुड = पीगला हुआ गुड
चउ = चार		पिंड गुडा = कठोर गुड
महुमाइ = मध (शहदादि)		दो = दो
विगइ = विगइ पे		पक्न = पकवान
बार = बारह		तिल्ल = तेल मे तला हुवा
		घय = घी में
		तलिय = तला हुवा

अर्थ

दुध पांच प्रकारका, घी चार प्रकारका दही चार प्रकारका तेल चार प्रकारका गुड दो प्रकारका और पक्वान गे प्रकारका इसतरह छ भक्ष दूधादि विगइ के २१ भेद है। मध (शहद) तीन प्रकारका, मदिरा दो प्रकारका, मास तीन प्रकारका और मक्खन चार प्रकारका इस प्रकर मधादि चार अभक्ष विग. के १२ भेद है दूध, दही, घी तेल, गुड, और पकवान यह उ भक्ष विगइ है। गाय भैंस, उन्टी बकरी और घेंटी का इस प्रकार से दूध पांच प्रकार का है। घी और दही उन्टी को छोड़कर चार प्रकार का है। तीलीका, सरसुरा अलसीका और कावरीकसुमी का इस तरह चार प्रकारका तेल कि विग. है

(बाकि मुगफली का, खोपरेल का, और कपासिया का तेल विगइमे नही गीना जाता है) (१) नरम और कठोर इसप्रकार दो तरह का गुड कि विगइ है। तेल मे और घीमे तला हुआ इस तरह दो प्रकार का पकवान कि विगइ है।

दूध के पाच नीवियाता

पयसाडि खीर पय वलेहि दुद्धट्टि दुद्ध विगइ गया ॥
दक्ख बहु अप्प तदुल तच्चुण्णंबिल सहिअ दुद्धे ॥ ३२ ॥

पयसाडि = बासुन्दी	विगइ गया = निवियाता	तच्चुण्ण = उसका
खीर = खीर	दक्ख = द्राख	(चांवल का) आटा
पेया = दुधपाक	बहु अप्प = ज्यादा और कम	अबिलसहिअं = खटास युक्त
अवलेहि = कुकरणु (राब)		
दुद्धट्टि = बली		
दुद्ध = दुधका	तंदुल = चावल	दुद्ध = दुधमे

अर्थ

१ बासुन्दी २ खीर ३ दूधपाक ४ कुकरणु (राब) ५ बली, ये पाच नीवियाता है यह अनुक्रमसे दुधमे द्राख ज्यादा या कम चांवल, आटा और खटाइ डालने से होता है।

घी के पाच नीवियाता और दही के पांच नीवियाता

नि भंजण विसंदण पक्कोसहितरिय किट्टिपक्कघय
दहिअे करंब सिहरिणी सलवण दहि घोल घोलवडा ॥ ३३ ॥

निब्भंजण = तला हुवा घी	किट्टि = घी के उपर का मेल (किट्टा)	सलवण दहि = लूणसहित नही
वीसंदण = कुलेर	पक्कघय = पकाया हुवा घी	
पक्कोसहितरिय = पकी हुई औषध के उपर तर हुवा	दहिअ = दहीमें से	घोल = मथा हुवा दही (मठा)
	करंब = करबो	
	सिहरिणी = श्रीखंड	घोलवडा = दहींवडा

(१) वर्तमान में तो खासकर मुगफलीका तलही प्रत्यक्ष इसे विगइमे नही मानना शकास्पद है तत्व केवली गम्य

अर्थ

(१) पकवाध तलनेके बाद मे रहा हुआ घी, (२) घी या दही की तर के साथ में बाजरी के आटा और गुड़ से जो बनाया हुवा कुलेर (३) औषध डालकर पकाया हुवा घी के उपर आइ तर (४) घी के गर्म करने पर उपर जो मेल आवे वो कीट्टा (५) औषध डालकर पकाया हुवा पक्का घी। (१) दही और चावल सामल कर के बघारे वो करबो (२) पाणी विना के दही मे सक्कर डालकर छानकर बनावे वो श्रीखंड (३) लुण (नमक) डालकर हाथ से मथा हुवा दही वो सलवण दही (४) वस्त्र से छणा हुवा दही वो घोल (मट्ठो) (५) दही छाण कर गर्म करके उसमे जो वड़े डाले वो घोलवडा (दहीवड़ा)

तेल के पांच और गुड़ के पांचनीवियाता

तिलकुटी निब्भंजण पक्कतिल पक्कुसहि तरिय तिल्लमली।
सक्कर गुलवाणय पाय, खंड अघकढिय इक्खु रसो ॥ ३४ ॥

तिलकुट्टि = तलसांकली	पक्क ओसहितरिय = पकाइ हुइ औषध के उपर कि तर	गुलवाणय = गलमाणू (राब)
निब्भंजण = तला हुवा तेल		पाय = गुड़किचासणी
	तिल्लमली = तेल का कीटा	खंड = खांड
पक्कतिल = पकाया हुवा तेल		अघकढिय = आधा उकला हुवा
	सक्कर = सक्कर (खांड)	इक्खुरसो = सांठेका रस

अर्थ

(१) तील्ली को सेककर गुड़की चासणी करके उसमे डालकर जो बनावे वो तील सांकली (२) पकवाध तलने के बाद मे रहा हुवा तेल (३) औषध डालकर पकाया हुवा तेल (४) औषध डालकर पकाया हुवा तेलके उपर जो आवे वोतर (५) तेलको गर्म करने पर उपर जो मेल आवे वो कीटा। (१) साकर (मिश्री)(२) थोड़े आटे को घीमे सेककर

गुडका पाणी डालकर बनावे वो गलपाणु (राव) (३) गुड कि चासणी करके खाजादि पर चन्नावे वो गोल की पाय, (४) खांड, (५) आधा उकाला हुवा साठेका रस

कडाइ निगय का पांच नीवियाता

पूरिअतव पूआ बीअ पूअ तनेह तुरिअ घाणाइ
गुलहाणी जलटप्पसि य पचमो पूत्तिकय पूओ ॥ ३५ ॥

पूरीअ तव = कडाइ भरी आय	तुरि अघाणाइ = चोथा आदि घाण का	पुत्तिकयपूआ = पोतस्था (पोता दे कर किया हुवा पुडा)
पूआ = पहीला पुडला	गुलहाणि = गोलघाणी	
बीअ पूअ = दुसरा पुडला	जलल्पसी = जल लापसी	पचमो = पांचमो
तनेह = ते स्नेह (घी या तेल) मे		

अर्थ

(१) घीया तेल से भरी हुइ कढाइ में पुरे वैसा एक बडा पुडला के बाद से दुसरे जो पुडे वो नीवियाता, (२) गरम किया हुवा घी या तेल मे (नया तेल या घी नही डाला हो तो तिनघाण निकलन के पश्चात) चोथा आदि घाण नीवियाता (३) गुड और घीकि चासणी करके उसमे धाणी नाखे वो गुलधाणी (४) पकवान करने बाद कढाइ आदि में चिकट निकलाने को आग्न को सेक कर गुड का पाणी डाले वो जल लापसी और (५) गुडधी बगेरा का पोता देकर बनाया हुवा पुडा यह नीवियाता है

गिहत्थ ससट्ठेण, इस आगार से नीवि मे जो कल्पे वो ससृष्ट द्रव्य.

दुद्ध दही चउरंगुल दवगुड घय तिल्ल अेक भत्तुवरिं
पिंडगुल मक्खणाण अद्दामलयच संसट्ठ ॥ ३६ ॥

दुद्ध = दूध	अेग = अेक आंगल	अद्दामलय = छोटे कण
दही = दही	भत्तुवरिं = भोजन पर (चावल पर)	च = और
चउरगुल = चार ओंगुल		संसठ्ठ = संसृष्ट
दव गुड़ = नरम गुड	पिंडगुल = कठोर गुड़से	
घय तिल्ल = घी और तेल	मक्खणाण = मसला हुवा चुरमामे	

अर्थ

चावल पर दूध और दही चार आंगुल हो और नरम गुड़, घी और तेल एक अंगुल होय वो संसृष्ट द्रव्य कहलाता है। कठोर गुड़ से मसला हुवा चुरमादि में गुड़ के छोटे छोटे कण होय वो संसृष्ट द्रव्य कहलाता है

नीवियात हत द्रव्य और उत्कृष्ट द्रव्य के लक्षण

दव्वहया विगइ विगइ गय, पुणो तेण तह यदव्व
उद्धरिअे तत्तमीय उक्किट्ठ दव्व इमचन्ने ॥ ३७॥

दव्वहया = द्रव्य से नष्ट	त = वो	उक्किट्ठ द्रव्य = उत्कृष्ट द्रव्य
विगइ = विगइ	हयन्व = नष्ट हुवा द्रव्य	
विगइ गय = नीवियाता	उद्धरिअे = बचा हुवा	इम = यह
पुणो = फीर	तत्तमि = तपा हुवा	च = और
तेण = उस विगइ से		अन्ने = दूसरा

अर्थ

(चावलादि) द्रव्य से नष्ट हुइ विगइ वो नीवियाता कहलाता है। फिर वो (दुधादि) विगय से नष्ट द्रव्य वो नष्ट द्रव्य कहलाता है। तलने बाद बचा हुवा या तपा हुवा घी या तेल से कोइ द्रव्य बनाया जाय वो उत्कृष्ट द्रव्य कहलाता है इस प्रकार दुसर आचार्य कहते है

अच्छा द्रव्य और लगे हुवे द्रव्यों के नाम

तिलसक्कुलि वरसोलाइ रायण बाइ दक्खवाणाइ
डोली तिल्लाइ इअ सरसुत्तम दव्व लेवकडा ॥ ३८ ॥

तिलसक्कुलि = तलसांकली	अंबाइ = आम	आइ = आदि
	दक्खवाणाइ = दाख का पाणी आदि	इअ = यह
वरसोलाइ = शागोद्याआदि		सरसुत्तम द्रव्य = अच्छाद्रव्य
	डोली तिल्ल = डोलीया का तेल	
रायण = रायण		लेवकडा = लेप कृत

अर्थ

तल साकली, शीगोड़ा (मेदा और सकर के बन हुवे) विगेरे। रायण आमादि फल और द्राक्ष का पाणी विगेरे (नारियल का पाणी) डोलीया का तेलादि ये सब उत्तम द्रव्य है और दूसरा नाम लेप कृत द्रव्य कहलाते है

कारण विना नीवियाता नही लेनेका उपदेश

निगइ गया ससट्ठा उत्तम दव्वाइ निव्वि गइयमि
कारण जाय मुत्त कापंति न मुत्त ज जुत्त ॥ ३९ ॥

अर्थ

तीस नीवियात, संसृष्ट द्रव्य और उत्तम द्रव्य नीवि मे (ज्ञान, ध्यान, तपस्या आदि) ठोस कारण (१) को छोडकर खाना नही कल्पता है। अत एव कहा है

निवेचन = पहले कहे हुवे छ द्रव्य के नीवियाता साधु को योग वहनादि और श्रावको को उपधान कि नीवि मे लवी तपस्या होने के कारण कल्पे परन्तु कोइ दिन नीवि करे उसको तो छ विगइ में से कोइभी विगइ उपर लेकर या बढाकर खाना नही कल्पे। शीफ विगइ का थरा मा स्पर्श हुआ हो परन्तु पीछे से चोखा नही देखन में आवे तो लेना कल्पे-जैसे (सेका हुवा पापड) नीवि मे-कोकम मीलें चीरा धणा, हल्दी मीलोने कि उत्थ हींग सुठ मीरच व लवण आदि मसाले आविल मे खाया हुआ लुखा (विगइ

(१) कारण के विषय में जो मुनियोग वहन करे परन्तु शारीरीक शक्ती न हो लवे समय तक नीवि कि तपस्या चलती हो संयम मे शिथलता आती हो तो कल्पे-परन्तु रसना इन्द्रिये स्वाद के कारण नीवियाता होते हुवे भी नही कल्पे क्योंकि तपस्या तो स्वादिष्ट आहार के त्याग से ही सार्थक है तपस्या करना और स्वादिष्ट आहार करना यह तपस्या का लक्षण नही है

विनाका) धान्य हिंग सुठ मर्च व लवण कडवा करी यातु लेना कल्पे (२)

बिना कारण से विगइ और नीवियाता खाने वाले को फल.

विगइ विगइभीओ विगइगयं जो भुजए साहु
विगइ विगइ सहावा विगइ विगइ बलानेइ ॥ ४० ॥

विगइ = विगइ को	भुजअे = खावे	विगइ = विगइ
विगइ बुरी गति में	साहु = साधु	विगइ = बुरी गति की तरफ
भीओ = डरता हुवा	विगइ = विगइ	
विगइ गय = नीवियाता को	विगइ सहावा = विकार के स्वभाव वाली	बला = जबरदस्ती
जो = जो		ने इ = ले जावे

अर्थ

नरकादि नीचगति से डरने वाला साधु छ विगइ को या ३० नीवियाता को खावे तो वो विगइ विकार के स्वभाववाली होने से जबरदस्ती से नरकादि खराब गति मे ले जावे

चार अभक्ष विगइ के १२ उत्तर भेद

कुत्तिय मच्छिअभामर, महु तिहा कट्ठपिट्ठ मज्ज दुहा
जल थल खग मसतिहा घयव मक्खण चउ अभक्खा ॥४१॥

कुत्तिय = कुतराका	पिट्ठ = जुवारका आटा	मंस = मांस
मच्छिअ = माखीका (मधुमखी)	मज्ज = दारू (मदिरा)	तिहा = तीन प्रकार से
भामर = भमराका	दुहा = दो प्रकारसे	घयव्व = घी की तरह
महु = मध (शहद)	जल = जल चरका	मक्खण = माखण
तिहा = तीन प्रकार से	थल = थल चरका	चउ = चार प्रकार का
कट्ठ = महुडाका लकडा	खग = खेचरका	अभक्खा = अभक्ष

---

(२) खरत्तर गच्छ वाल आंबील में हींग सुंठ मर्च लवण आदि कोइ चिज नही लेते है, सिर्फ लुखा अलुणा धान व पाणी ही लेते है

अर्थ

बगतराका माखीका, और भमरा का इस प्रकार से तिन तरह का [illegible] महुड़ा (लकड़ी, पुष्प फुलादि) का और जुवार के आटे को [illegible] वो दारू दो प्रकार का है। जलचर, स्थाल चर और खेचर [illegible] तरह मांस तीन प्रकार का हैं ओ घी की तरह मक्खन चार [illegible] चारों विगइ अभक्ष है

विवेचन = मध (शहद) मदीरा और मक्खन में [illegible] असंख्य त्रस (बे इन्द्रीय) जीव पैदा होते है और [illegible] मांस, रांधा हुवा मांस और रधाते (पकाते) हुवे मांस में [illegible] त्रस जीव और बादर निगोद (साधारण वनस्पतीकाय) [illegible] इस वास्ते यह चारों महा विगइ रोगादि के कारण [illegible] जिन्दा रहने कि इच्छा या थोड़े स्वाद के वास्ते [illegible] बहुत समय तक लेना बुद्धिमान पुरुषों के लायक नहीं हैं।

पच्चक्खाण के १४७ भांगे

मण वयण काय मणवय वयतणु तिजोगि
कर कारण मइ दुति जुइ, तिकालि [illegible]

मण = मन	सगि = सातसे
वयण = वचन	सत्त = सातको
काय = काया	कर = करना
मणवय = मन वचन	कारण = कराना
वयतण = वचन, काया	अणुमइ = अनुमोदन
तिजोगि = तीन योग	

अर्थ

१ मन, २ वचन, ३ काया, ४ मन, वचन [illegible] वचन [illegible] और ७ मन वचन, काया। इस प्रकार सात है [illegible] करना [illegible]

३ अनुमोदन करना, ४ करना कराना, ५ करना अनुमोदना, ६ करना अनु मोदना ७ करना, कराना, अनुमोदना। इस प्रकार ७×७=४९ भाग हुवे इन्हे भूत भविष्य औ वर्तमान इनतिनो कालकी अपेक्षा गुण करने से १४७ भागे हुवे

विवेचन = भूत कालमें जो अनुचित आचरण हो गया हो उसकी निंदा और गहा करता हुं वर्तमान कालमें जो अनुचित आचार में कर रहा हु उनको रोकता हु और भविष्य में एसा आचरण नही करू इस तरह पचक्खाणमे भूतकाल कि निंदा वर्तमान का संवर और भविष्यका प्रत्याख्यान करता हु

श्रेयच उक्तकाले सयच मण वयण तणूहि पालणिय
जाणग जाणग पासित्ति भगच उगे तिसुअणुना ॥ ४३ ॥

श्रेय = इस तरह उक्तकाले = कहे हुवे समय के विषय सय = स्वय मणवयणतणुहि = मन, वचन कायासे	पालणिय = पालन करने लायक है जाणग जाणग पास = जाण और अजाण के पास	इत्ति = इसीतरह भग चउगे = चार भागासे तिसु = तिन भागासे अणुना = अनुज्ञा

अर्थ

इस प्रकार कहे हुवे कालमें अपन आप मनवचन और कायासे पचक्खाण पालन योग्य है। जाननेवाला और नही जाननेवाला के पास इस तरह चार भांगो मे से तीन भागे अनुज्ञा हैं।

१ पचक्खाण = लेनेवाल भी समझ दार और देनेवाला भी जाणकार (समझनेवाला) = शुद्ध भांगा
२ „ लेनेवाला जाणकार और देनेवाला अजाण ,
३ „ लेनेवाला अजाण और देनेवाला जाणकार ,
४ लेनेवाला अजाण और देनेवाला भी अजाण = अशुद्ध भांगा

पचक्खाण की छ शुद्धि

फासिय, पालिय, सोहिय, तीरिय किटिय अराहिय छ शुद्ध
पच्चक्खाण फासिय विहिणो चिय कालिज पत्त ॥ ४४ ॥

फासिय = स्पर्श कीया	किट्टिय = कीय (प्रशशा किया)	पच्चक्खाण = पचक्खाण
पालिय = पालन कीया		फासिय = स्पर्श कीया
सोहिय = शोभाया (दीपाया)	अराहिय = आराधन किया	विहिण = विधि युक्त
		उचियकालि = उचित समय में
तीरिय = तीर्यु	छ शुद्ध = छ प्रकार से शुद्धि	च = भी किया
		पत्त = प्राप्त कीया

अर्थ

१ स्पर्श किया २ पालन कीया, ३ दीपाया ४ तीयु ५ प्रशशा कीया और ६ आराधन किया । इस तरह छ प्रकार से पच्चक्खाण कि शुद्धि है

विधिसे उचित समय पर जो पचक्खाण लिया हो उसे स्पश कीया कहा जाता है जैसे नवकारसी आदि सुर्योदय से पेहला लना या धारणा करना)

पालिय पुणपुण सरिय सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणओ
तिरिय समहियकालो किटिय भोयण समय सरणा ॥ ४५ ॥

पालिय = पालन कीया	सेस = बाकीसे	समहियकालो = कुछ ज्यादा समय
पुणपुण = वारवार	भोयणओ = भोजन करने से	किट्टिय = प्रशशा किया
सरिय = याद कीया		भोयण = भोजनका
सोहिय = दीपाया	तिरिय = तीयु	समय = समय
गुरुदत्त = गुरुको देकर		सरणा = याद करने से

अर्थ

किये हुवे (लिये हुवे) पचक्खाण को बारंबार याद करना यह पालन कीया कहा जाता है, गुरू को देकर बाकी जो हो उस से भोजन करना शोभा कहलाता है विचार कीये हुवे समयसे कुच्छ ज्यादा समय तक संतोष रखकर पालन करने से तीर्यु (पारलगया) कहलाता है भोजन के समय पर (पचक्खाण पुरा होने पर) याद करने से कीर्तु कर लाता है।

दुसरी तरह से पचक्खाण कि शुद्धि

इय पडिअरिअ आराहिय तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा
जाणण विणयडणु भासण, अणु पालण भाव सुद्धित्ति ॥४६॥

इय = इस तरह	तु = फीर	अणुभासण = अनुभाषण
पडिआरिअं = आचरण किया हुवा	अहवा = अथवा	अणुपालण = अनुपालन
	छ सुद्धि = छ शुद्धि	भावसुद्धि = भावशुद्धि
आराहिअ = आराधन किया हुवा	सद्दहणा = श्रद्धा	
	जाणण = ज्ञान (जाणपण)	इत्ति = इसतरह

अर्थ

इस प्रकार कीया हुवा पचक्खाण वो भी आराधन किया पचक्खाण कहलाता है, या दुसरी तरह से भी छ शुद्धि हैं। १ श्रद्धा के से पचक्खाण करना वो श्रद्धाशुद्धि २ अवसरवगमय का ज्ञान सहित पञ्चक्खाण वोज्ञानशुद्धि, ३ गुरू को वंदन करने रूप विनय कर के पञ्चक्खाण लेना वो विनय शुद्धि ४ गुरु पचक्खाण देवे तब मन में मदस्वर से प यक्खाण स्वय बोले वो अनु भाषण शुद्धि ५ कष्ट पड़ने पर भी लिया हुवा पचक्खाण बराबर पालन करे वो अनुपालन शुद्धि, और ६ इस लोक कि और पर लोक कि कोइ भी इच्छा न रखते हुवे राग, द्वेष, क्रोध, मानाकपटादि रहित होकर, (केवल कर्मक्षय वास्ते) पाले वो भाव शुद्धि इस तरह छ शुद्धि हैं।

पचक्खाण से इस लोक मे और परलोक मे होनेवाले फल पर दृष्टांत

पच्चक्खाणस्स फलं इह परलोअे यहोइ दुविह तु
इहलोअे धम्मिलाइ, दामन्न गमाइ परलोअे ॥ ४७ ॥

पच्चक्खाणस्स = पच्चक्खाण का	होइ = होता है	धम्मिलाइ = धम्मिल कुमार आदि को
फल = फल	दुविह = दो प्रकार से	दामन्नगमाइ = दमनक आदि को
इह = यह लोक	तु = पीर	
परलोअे = परलोक	इहलोअ = इसलोक मे	परलोअे = परलोक मे

अर्थ

पच्चक्खाण का फल इस लोक और परलोक में [illegible] तरह दो प्रकार से है इस लोक में धम्मिल कुमार आदि को अच्छा फल मीला परलोक मे दमन कादिको अच्छा फल मीला

धम्मिल कुमार का दृष्टांत

कुशार्त नगर में सुरेन्द्र दत्त और सुभद्रा नाम की स्त्री रहती थी उनको धर्म आराधन करते बहुत वर्षों के बाद एक पुत्र कि प्राप्ति हुइ। इनसे उसका नाम धम्मिल रक्खा। बड़ा होने पर धमशास्त्र और दूसरि कलाओं मे परिपूर्ण हुवा तब माता पिताने उसको धनवसु शेठ कि यशोमति कन्या के साथ लग्न किया परन्तु थोड़े ही समय में धम्मिल कुमार का चित्त धर्म मे ज्यादा रहने लगा। और अपनी स्त्री को मायाजाल समझने लगा। इसकि खबर माता पिता को होनेपर [illegible] माताने उसको कुमारीयों के सुपर्द किया उनकि संगति के परिणाम से वो वेश्यागामी हो गया, माताभी इसका वेश्याको धन भेजने लगी आखीर एक दिन पुत्रको बुलाने से मजा वो नही आने से उसके वियोग के कारण माता पिता का मृत्यु हो गया, धन समाप्त होनेसे अपने पीयर चली गइ वसंतसेना वेश्या न भी धम्मिल कुमार कि

[illegible] फिरते फिरते उसको अट्यन्त मुनि [illegible] परन्तु धर्मिल्ल व सुनर दे मुत [illegible] साधु कभी समार मुक्त उसने नही [illegible] मे यह आश्रव छत्र [illegible] होने वला है एसा जानकर मुनि महाराज ने कहा के तुम छ महिने तक आठ दिन का तप करना मुनि का वेष [illegible] दोष रहित गौचरि करना [illegible] मत्र और वेसा मे [illegible] मत्र का [illegible] करना। इस प्रकार मुनि ने कहन मे धर्मिल्ल [illegible] यथाथ रात्रि से किया। [illegible] म देवकि प्रसनता से और पूर्व भव के उत्तम कर्मो के शुभ दान से राज्य की और पुण्यकि का वैभवरूप बहुत सुख मील। पीछे से धन [illegible] भव चलाने से वैराग्य प्राप्त कर राज्य पुत्रको देकर दीक्षा ग्रहण [illegible] ग्रहण किया। अन्तमे एक महिन का अनशन करके काल करके वो [illegible] लोक में उत्पन्न हुआ वहाँसे महाविदेह मे जन्म लेकर चारित्र [illegible] केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष जायेगा

दामनक का दृष्टांत

[illegible] मे सुनद नाम के कुल पुत्रने जिननाथ जिनके उपदेश से [illegible] मे मांसनदी ग्यान की प्रतिज्ञा (पच्चक्खाण) की। दैवयोग [illegible] पडन से लोक माद्याकुल हो गये सुनद [illegible] [illegible] क्षुधा से पिडित होन लगा एक समय उसके [illegible] पकड़ने को जाग्दी परन्तु सुनद न तो मच्छ [illegible]। उसम एक मच्छला कि पाग छेदन हो जान से बहुत [illegible] पकर दीया मास के पच्चक्खाण के प्रभाव से मरके [illegible] नाम का श्रेष्ठ पुत्र हुआ आठ वर्ष कि आयु होने पर [illegible] ([illegible]) के [illegible] से उसका कुटुंब का नाश हुआ तब सुनद (दामनक) [illegible] के यहाँ रहा वहाँ भिक्षा के वास्ते आये साधुओं मे से [illegible] अपने ज्ञान से " यह दामनक शठ है [illegible] साधुओं को कहा इस बात कि शठ के से उसको [illegible] चडालोने उसको [illegible]

आगली का छेदन करके उसे भगा दीया वहाँ से दुसरे गामन इसी शर कि गायों की रक्षा करनेवाले मालिकने पुत्र करके रखा। किसी दिन सगर दत्त यहाँ आया और उसे पहिचान कर "विष देना" एसा पत्र देकर उसको अपने घर भेजा बहुत चलने से वो थका हुआ अेक देव मन्दिर मे सोता। वहाँ पर उसी सेठ कि विषा नाम की पुत्री आई और दामनक पर मोहित होने से विष के बदले "विषा कर दीया-कुन्वी लेकर वो पत्र देखकर विषा नाम कि कन्या का उसने साथ पाणी ग्रहण करा दीया-यह मालुम हाने पर शेठको बहुत दुःख हुआ फिर से दामनक को मारने के प्रयत्न मे स्वय अपना पुत्र मारा गया इससे सेठने "साधु लक्षणों के वचन मिथ्या नही होते" एसा विचार कर उसको घर का मालिक बनाया। गुरु पधारे सुनकर वो वदना करने गया वहाँ धर्म उपदेश सुनकर पुर्व भव का माछ का पच्चक्खाण याद आया जिससे सम्यक्त्व ग्रहणकर धर्म आराधन कर देव लोक मे गया वहाँ से महाविदेह मे उत्पन्न होकर मोक्ष जायगा

भाव से किया हुआ पच्चखाण का फल

पच्चक्खाण मिण सेविउण भावेण जिणवर उदिह
पत्ता अणंत जीवा सासय सुक्ख अणाबाह ॥८॥

पच्चक्खाण = पच्चखाण को
इण = इस
सेविउण = सेवन करके
भावेण = भावसे

जिणवर = जिनेश्वर
उद्दिट्ठ = उपदेश दीया हुआ
पत्ता = प्राप्त कीया

अर्थ

जिनेश्वर महाराज का कहा हुआ इस पच्चक्खाण को भाव से सेवन करने से अनंते जीव दुःखसे मुक्त शाश्वतासुख (मोक्ष) को

